डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

तेरहवाँ ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव

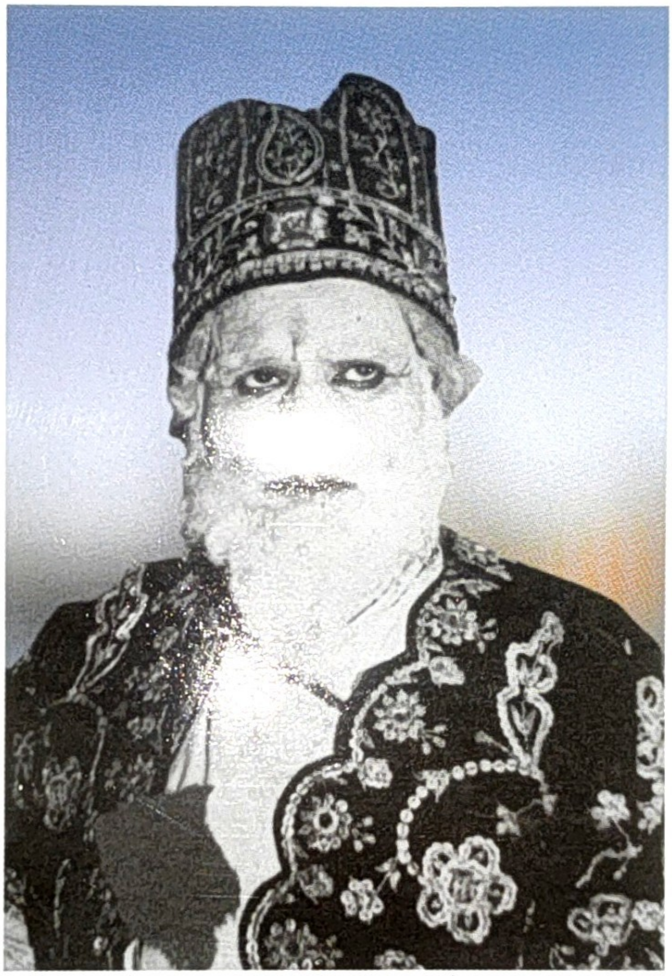

पटना में अभिनीत 'बहादुरशाह' की भूमिका में भगवान प्रसाद।

8 से 10 मार्च, 2022

कालिदास रंगालय, पटना

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला-जागरण, पटना

वेबसाइट/ईमेल :

www.chaturbhujdrama.com / apriyadarshi76@yahoo.in/apriyadarshi738@gmail.com/kalajagran@rediffmail.com

सुधा
सदा शुद्धता का
भरोसा है... विश्वास हैं... क्योंकि
सुधा दूध हमारे पास है..!
COMFED
पटना डेयरी प्रोजेक्ट
टोल फ्री न.: - 1800 345 6199
हेल्पलाईन नं. :- 06204381026
फोन : 0612-2253316
E-mail : vpmu.mkt@gmail.com, vpmunin@gmail.com | Ph : 0612-2252553, 2252542

सहयोग : कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

तेरहवाँ ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव 2022

बिहार, पटना

8 से 10 मार्च, 2022

सम्पादक

प्रणय कुमार सिन्हा

स्थान

कालिदास रंगालय,
पूर्वी गाँधी मैदान, पटना

**

आयोजक

मगध कलाकार

एवं

कला जागरण, पटना

वेबसाइट/ईमेल : www.chaturbhujdrama.com / apriyadarshi76@yahoo.in/apriyadarshi738@gmail.com/kalajagran@rediffmail.com

अध्यक्ष की कलम से

देश में ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव प्रतिवर्ष सिर्फ पटना में मनाया जाता है। इस महोत्सव का आयोजन ऐतिहासिक नाटकों के भीष्म पितामह डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में किया जाता है।

मगध कलाकार और कला जागरण संस्था के संयुक्त तत्वावधान में यह आयोजन पिछले 12 वर्षों से किया जा रहा है। इस वर्ष 8 से 10 मार्च, 2022 तक तेरहवां ऐतिहासिक नाट्योत्सव पटना के कालिदास रंगालय में आयोजित किया गया है।

डॉ. चतुर्भुज देश के एक ऐसे नाटककार रहे जिन्होंने सिर्फ नाटक लिखा ही नहीं है, बल्कि उन नाटकों को मंच पर प्रस्तुत भी किया। उनके सभी नाटक मंच पर सफलतापूर्वक खेले गए। आज भी उनके नाटकों को खेलना नाट्य संस्थाओं के लिए गौरव का विषय बना हुआ है। उनके नाटक रेडियो और दूरदर्शन पर प्रसारित होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं।

डा. चतुर्भुज एक नाटककार के साथ-साथ मंच के अभिनेता, निर्देशक और व्यवस्थापक भी रहे। वह नाट्य शास्त्र के मनीषी थे। उनकी पुस्तक 'भारतीय एवं विदेशी नाटकों का इतिहास' आगामी पीढ़ी के लिए विशेष भेंट है।

उन्होंने अधिकांश ऐतिहासिक और पौराणिक नाटक ही लिखे हैं लेकिन कुछ सामाजिक नाटक भी उन्होंने लिखा है, जिनमें 'बाबू विरंचिलाल' काफी लोकप्रिय नाटक है। डॉ. चतुर्भुज का मानना था कि नाटक के माध्यम से हम समाज से वैमनस्यता कम कर, आपसी भाईचारा को बढ़ा सकते हैं। रचनाकार, समाज को नई दिशा देने में समर्थ हैं। नाटक के माध्यम से हम धर्म, संस्कृति और सभ्यता को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का काम करते हैं। ऐसा होता रहा है और आगे भी होता रहेगा।

ऐतिहासिक नाटक भूतकालीन घटनाओं का स्मरण दिलाते हुए हमें आगे गतिशील रहने का मार्ग प्रशस्त करता है। साथ में कुछ ऐसी ऐतिहासिक घटना इतिहास में वर्णित हैं जिसे नाटक के माध्यम से प्रदर्शित कर आज की युवा पीढ़ी को सावधान रहने का संकेत भी देती है। ऐतिहासिक नाटक तत्कालीन समाज का आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक दृश्यों के माध्यम से देश-काल का चित्रण करता है।

त्रिदिवसीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव की सफलता के लिए आयोजनकर्ताओं, उनके रंगकर्मियों को हार्दिक बधाई एवं ढेरों शुभकामनाएं।

सुनील कुमार सिन्हा
अध्यक्ष, मगध कलाकार

प्रकाशक

कला-जागरण : **गणेश प्रसाद सिन्हा, अध्यक्ष**
C/11, कंकड़बाग कॉलोनी, पटना-20
(मो. 09431622131)

: **सुमन कुमार, सचिव**
सुन्दरी भवन, देवी स्थान, बंगाली टोला,
पूर्वी मीठापुर फार्म, पटना-1 (मो. 9431066931)

मगध कलाकार : **सुनील कुमार सिन्हा**
अध्यक्ष
जानकी अपार्टमेंट
चित्रगुप्त नगर
पटना- 800020
(मो. 7488694395)

: **डॉ. अशोक प्रियदर्शी, सचिव**
क्वार्टर नं.-106, रोड नं.-6,
श्रीकृष्ण नगर, पटना-800 001
(मो. 09334525657/9709810010)

साज-सज्जा : फकीर मुहम्मद
कवर डिजाइन : चंदन
मुद्रक : आदित्य पब्लिकेशन
तारामंडल के सामने, हथुआ पाठशाला के पास
दक्षिणी मंदिरी, पटना-800001
मो.-9576099416/9709663354
rakeshprints224@gmail.com

संक्षिप्त परिचय

नाटककार डॉ. चतुर्भुज

नाम : डॉ चतुर्भुज

जन्म तिथि : 15/01/1928 ई. महाप्रयाण : 11/08/2009 ई.

जन्म स्थान : मुहल्ला- महलपर, बिहार शरीफ, जिला-नालन्दा

शिक्षा : (क) एम.ए. (पालि और बौद्ध साहित्य में)
(ख) पी-एच.डी., (शोध विषय- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक- एक अध्ययन')

पिता : स्व. मुंशी प्रयाग नारायण

वेबसाइट : www.chaturbhujdrama.com

मगध कलाकार का पता : रोड नम्बर-06, क्वाटर नम्बर-106, श्री कृष्ण नगर, पटना-800001 (बिहार) फोन : 9334525657, 9709810010

उपलब्धियाँ

1. डॉ. चतुर्भुज का जन्म बिहार में हुआ। इन्होंने अपने जीवन के इक्यासी बसंत देखे। सारा जीवन उन्होंने हिन्दी के माध्यम से नाट्य-लेखन, प्रस्तुतिकरण, निर्देशन, मंचन, अभिनय कला के प्रचार-प्रसार में लगा दिया और नाट्यकला के विकास में प्रयत्नशील रहे। नाटक के अलावा अन्य साहित्य विधाओं में भी इन्होंने रचना की है।

2. विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों में इनके कार्यों और उपलब्धियों का उल्लेख आया है। जैसे:- साहित्य अकादमी के 'हूज हू' में, डॉ. दशरथ ओझा के 'हिन्दी नाटक कोश' में, डिस्टिंगयूइस्ड यूथ ऑफ इन्डिया 'हूज हू' (पृष्ठ-146) में, 'बायोग्राफी इन्टरनेशनल' में, 'एशिया पेसेफिक हूज हू' में, 'एशियन अमेरिकन हूज हू' में, लर्नेड एशिया' में, तथा अनेक संदर्भ ग्रन्थों में इनके नाम का और इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। 'रेफरेन्स एशिया' में इनके बारे में विस्तार से उल्लेख है जिसमें एशिया के चुने हुए लगभग 1500 व्यक्ति ही सम्मिलित किये गये हैं। इनके अलावा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से प्रकाशित और डॉ. प्रतिभा अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'रंगकोश' के दोनों खंडों में डॉ. चतुर्भुज का उल्लेख किया गया है। नौवीं कक्षा के लिए बिहार टेक्स्ट बुक कमिटि द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'वर्णिका' के 'बिहार की नाट्यकला' अध्याय में डॉ. चतुर्भुज का नाटक में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

3. नाटक और थियेटर के प्रति डॉ. चतुर्भुज के योगदान पर अनेक विद्वानों ने एम.फिल. और पी-एच.डी. (कर्नाटक विश्वविद्यालय/ ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा/मगध विश्वविद्यालय आदि) के लिए शोध कार्य किया। कर्नाटक में एक विद्वान को डॉ. चतुर्भुज के पौराणिक नाटकों पर शोध करने में पी-एच.डी. की डिग्री से सम्मानित किया जा चुका है।

रंगमंच :-

4. डॉ. चतुर्भुज की मान्यता थी कि नाटक सिर्फ एक विधा ही नहीं है बल्कि इसमें साहित्य, कला, विज्ञान सभी कुछ है। अर्थात् अभिव्यक्ति का यह सबसे सशक्त और समन्वित माध्यम है। जब नाटक लिखा जाता है तब यह साहित्य है, तैयारी के समय इसमें विभिन्न कलायें जुड़ती हैं और मंचन के दौरान प्रकाश, ध्वनि, मेकअप, सेट निर्माण आदि विज्ञान विषयक बातें आती हैं। डॉ. चतुर्भुज ने अपने पूरे जीवन में इन विषयों का मनन किया है और इसे व्यवहार में भी वे लाते रहे।

5. नाटक को पंचम वेद की संज्ञा देने के बाद भी हिन्दी की उपेक्षित विधा नाटक और रंगमंच है। डॉ. चतुर्भुज ने साहित्य और कला के रूप में इसे समृद्ध किया। इसे रोजी-रोटी से जोड़ कर बेरोजगारों को एक नई दिशा दी। इसी उद्देश्य से संघर्ष करते हुए उन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्यशास्त्र एक स्वतन्त्र विषय के रूप में प्रारम्भ कराया। सरकारी सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे वहां प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में ढाई साल तक सेवारत रहे। आगे चल कर इन्होंने इन्टरमीडिएट स्तर पर नाटक को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकृति प्रदान कराई।

6. डॉ. चतुर्भुज का प्रयास स्मरणीय माना जायेगा कि उन्होंने बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जी से मिल कर बिहार में नाट्य प्रदर्शन पर लग रहे मनोरंजन कर को समाप्त कराया और बिहार में नाट्य प्रदर्शन, मनोरंजन-कर से मुक्त हुआ। इससे हिन्दी रंगकर्मियों को काफी लाभ हुआ है।

7. सन् 1952 ई. में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दी और रंगमंच के प्रचार-प्रसार के लिए मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की और प्रमुख रूप से ग्रामीण अंचलों में हिन्दी में नाट्य प्रदर्शन किये। आज के लोग ग्रामीण अंचलों में जाना नहीं चाहते। डॉ. चतुर्भुज इसके अपवाद थे। इनके नाम से ग्रामीण अंचलों के सभी बड़े-छोटे रंगकर्मी परिचित हैं।

8. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे रंगकर्मी रहे जिन्होंने पारसी युग के नाटकों में अभिनय, निर्देशन करते हुए हिन्दी युग के नाटकों को एक नई दिशा देने का सफल प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी नाट्य लेखन में एक नई शैली दी। इतिहास में छिपे चरित्रों और घटनाओं को नाटक के माध्यम से युवा वर्ग को परिचित कराने का सफल प्रयास किया। उन्होंने पारसी युग से बढ़ते हुए आज के नुक्कड़ नाटकों और टैरिस (Terrace) थिएटर तक का एक लम्बा सफर तय किया था।

9. डॉ. चतुर्भुज ने लगभग 300 से अधिक हिन्दी नाट्य प्रदर्शनों में लेखक, निर्देशक, अभिनेता के रूप में भाग लिया। इन प्रदर्शनों से हिन्दी का बड़ा प्रचार-प्रसार हुआ।

10. फिल्म और रंगमंच के चर्चित कलाकार पृथ्वीराज कपूर उनके नाटक 'कलिंग-विजय' को देखने के लिए स्वयं अपने रंगकर्मियों के साथ बख्तियारपुर (पटना जिला) आये थे। उन्होंने डॉ. चतुर्भुज की लगनशीलता देख उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। बम्बई लौटने के बाद भी डॉ. चतुर्भुज के साथ श्री कपूर का सम्बन्ध बना रहा।

11. नव नालन्दा महाविहार, नालंदा के प्रांगण में आयोजित कॉन्वोकेशन (1977) और द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन (1980) में डॉ. चतुर्भुज ने अपनी संस्था के कलाकारों द्वारा बौद्ध ग्रंथ 'दिव्यावदान' के कुणालावदान की कथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' का मंचन कराया। उस अवसर पर कई देश के बौद्ध विद्वानों के साथ आस्ट्रेलिया के इतिहासकार डॉ. ए.एल. बाशम और बौद्ध विद्वान भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी उपस्थित थे। नाटक देखकर उन विद्वानों के साथ अन्य दर्शक भावुक थे।

12. अपनी सांस्कृतिक संस्था 'मगध कलाकार' के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज ने न सिर्फ हिन्दी रंगमंच को गौरवान्वित किया था बल्कि नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से अर्जित राशि एकत्रित कर अनेक सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं और सरकार को प्रदान कर गौरव प्राप्त किया था। वे कुछ प्रमुख सरकारी एवं गैरसरकारी सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाएं हैं- एस.यू. कॉलेज, हिलसा/ जमुई में स्थापित स्टेडियम/ रांची समाज कल्याण समिति/ मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष/ महिला महाविद्यालय, खगौल/ प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष/ राष्ट्रीय सुरक्षा कोष आदि।

13. अपनी संस्था के कलाकारों और बौद्ध भिक्षुओं का दल लेकर डॉ. चतुर्भुज ने बिहार का प्रतिनिधित्व करते हुए राजधानी दिल्ली के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर 1957 ई. में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रस्तुत की और पुरस्कृत हुए। पटना के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर झाँकियों का प्रदर्शन इनके प्रयास से ही सन् 1979 ई. से आरम्भ किया गया जो आज तक गतिशील है।

14. सरकारी सेवा से निवृत्त होने के दस वर्षों के बाद डॉ. चतुर्भुज ने मगध विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की थी। इनके शोध का विषय था- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक-एक अध्ययन'।

15. हिन्दी को रंगमंचीय दृष्टि से समृद्ध करने के लिए उन्होंने दो प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृत नाटकों का हिन्दी रंगमंचीय रूपान्तर करके सफलतापूर्वक उन्हें मंचित किया। ये नाटक हैं- 'शकुन्तला' और 'मुद्राराक्षस'।

16. उत्तर-दक्षिण की सांस्कृतिक एकता पर आधारित इनका साहित्यिक हिन्दी मौलिक नाटक 'रावण' पटना के कालिदास रंगालय के मंच पर लगातार तीन माह तक छुट्टियों के दिन मंचित होता रहा। उसे काफी प्रशंसा मिली। यह नाटक मील का पत्थर साबित हुआ। इस नाटक से प्रभावित होकर बिहार आर्ट थिएटर के संस्थापक निदेशक अनिल कुमार मुखर्जी ने इसका बंगला अनुवाद किया। कालान्तर में रावण नाटक का मैथिली अनुवाद युवा पत्रकार लक्ष्मी कान्त सजल ने किया। अंग्रेजी अनुवाद का श्रेय बिहार

सरकार के पदाधिकारी कुमार शांत रक्षित को जाता है। भाषा संगम, इलाहाबाद के महासचिव डॉ. एम. गोविन्द राजन ने इस नाटक का तमिल भाषा में अनुवाद किया जिसका प्रकाशन चेन्नई से किया गया। बंगला भाषा और अंग्रेजी भाषा में अनूदित रावण नाटक के प्रकाशन की प्रतीक्षा पाठकों में बनी है।

17. डॉ. चतुर्भुज के अन्य कई ऐतिहासिक नाटकों का मैथिली और अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है जिनका प्रकाशन अभी नहीं हो पाया है।

नाट्य-लेखन :-

18. हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देख डॉ. चतुर्भुज ने नाट्य-लेखन की ओर अपना कदम बढ़ाया। उनका पहला नाटक था- मेघनाद। नाट्य प्रदर्शन की सफलता के बाद अन्य रंगकर्मियों की मांग पर उन्होंने इसका प्रकाशन किया। फिर तो नाट्य-लेखन, प्रदर्शन के बाद प्रकाशन की ओर उन्हें कदम बढ़ाना अनिवार्य हो गया। प्रत्येक वर्ष हर रंग संस्था की मांग होती दशहरे के मौके पर डॉ. चतुर्भुज लिखित कोई नवीनतम नाटक ।

19. डॉ. चतुर्भुज का लेखन भारत विभाजन से पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। उनकी कहानियाँ, लेख, संस्मरण आदि का प्रकाशन उन पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे थे जो पत्रिकाएं आज या तो बन्द हो गयी हैं अथवा भारत विभाजन के बाद इन दिनों वे पत्रिकाएं पाकिस्तान क्षेत्र में चली गई हैं। उस समय की चर्चित पत्र-पत्रिकाएं रही हैं- विश्वमित्र (कलकत्ता), लक्ष्मी (लाहौर), ज्योत्स्ना, हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नवनीत, सत्यकथा आदि।

20. डॉ. चतुर्भुज के प्रकाशित रंगमंचीय नाटकों की संख्या चालीस से अधिक हैं। रेडियो-टेलिविजन के लिए भी इन्होंने सैकड़ों नाटक और रूपक लिखे। 'बाबू विरंचीलाल' नामक टेलीफिल्म का निर्माण भी किया।

21 उत्तर-प्रदेश की सरकार ने डॉ. चतुर्भुज को उनकी एक नाट्य पुस्तक (मीरकासिम) पर पुरस्कृत किया है। केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय (संस्कृत), बिहार राजभाषा विभाग आदि ने इनके हिन्दी नाटकों के प्रकाशन के लिए समय-समय पर आर्थिक अनुदान दिये हैं।

22. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे नाटककार रहे जिन्होंने विदेशी चरित्रों को अपने नाटकों में स्थान दिया। वे चरित्र ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहे। उनके नाटकों में अंग्रेज, फ्रेंच, इटैलियन, ग्रीक, चीनी आदि चरित्र रहे हैं। चरित्रों को सजीव बनाने के लिए उन्हें संबन्धित देश के दूतावासों से बराबर सम्बन्ध बनाये रखना पड़ा था।

23. डॉ. चतुर्भुज के चुने हुए पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक रंगमंचीय नाटकों का संग्रह तीन खंडों में 'चतुर्भुज रचनावली' दिल्ली से समय प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इनकी कुल पृष्ठ संख्या लगभग 1500 है।

24. समय प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास' डॉ. चतुर्भुज की उल्लेखनीय पुस्तक कही जायेगी जिसमें उन्होंने प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटकों के अलावा यूनानी, अंग्रेजी, फ्रेंच, अमेरिकन, रूसी, जर्मन, इटैलियन, चीनी, जापानी, भाषाओं के नाटकों का इतिहास भी है। हिन्दी में इस प्रकार का यह पहला ग्रन्थ है जिसमें इतनी भाषाओं के नाटकों का इतिहास एक स्थल पर उपलब्ध है। इसके लेखन में विदेशी दूतावासों ने भी सामग्री और चित्र दिये हैं।

25. अपने जीवन के अन्तिम समय में डॉ. चतुर्भुज रंगकर्म के व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर एक पुस्तक लिख रहे थे- 'नाट्य-शिल्प-विज्ञान'। सात अध्याय का लेखन हो चुका था लेकिन असामयिक उनकी मृत्यु हो गई। पुस्तक अधूरी है। लेकिन उसके प्रकाशन की योजना बन रही है ताकि रंगकर्मी उस पुस्तक से लाभान्वित हो सकें।

26. इतिहास डॉ. चतुर्भुज का प्रिय विषय रहा था। यही मूल कारण है कि उन्होंने इतिहास विषयक चरित्रों को नाटक के माध्यम से सजीव किया। नाट्य लेखन के साथ ही उन्होंने तीन ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। **'समुद्र का पक्षी'** ऐतिहासिक उपन्यास इटैलियन यायावर मनूची के जीवन चरित्र पर आधारित है जिसने शिवाजी और औरंगजेब के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था और उसने स्वयं उसमें भाग भी लिया था। दूसरा उपन्यास **राजदर्शन** है। यह उपन्यास मुंगेर के नवाब मीरकासिम के चरित्र पर आधारित है जिसने अल्पकाल के शासनकाल में ही इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया था। तीसरा उपन्यास है भगवान बुद्ध

के गृह-त्याग से लेकर उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित- **'तथागत'**। इन उपन्यासों में तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं का सजीव चित्रण है।

27. जहाँ एक ओर 1857 के वीर सेनानी पीरअली, कुंवरसिंह, झांसी की रानी, बहादुरशाह जैसे नाटकों में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दु-मुस्लिम एकता और सर्वधर्म समन्वय को दर्शाने का सफल प्रयास किया है, वहीं अरावली का शेर, भीष्म-प्रतिज्ञा, शिवाजी, सिकन्दर-पोरस, टीपू सुल्तान में भारतीय इतिहास और संस्कृति को गौरवान्वित किया है। दूसरी ओर उनके नाटक कलिंग-विजय, पाटलिपुत्र का राजकुमार, प्रतिशोध, आदि में बौद्ध धर्म की घटनाएं सजीव रूप से चित्रित हुई हैं।

28. डॉ. चतुर्भुज लिखित उनकी आत्मकथा **'मेरी रंगयात्रा'** शीर्षक से समय प्रकाशन, नई दिल्ली से उनके मरणोपरान्त प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन के अनछुए पहलुओं का उल्लेख करते हुए बताया है कि नाटक और रंगमंच उनके जीवन की प्रतिछाया बना रहा।

बौद्ध साहित्य और दर्शन :-

28. आर्थिक अभाव के कारण डॉ. चतुर्भुज ने कभी कॉलेज का मुंह नहीं देखा। लेकिन पढ़ने की ललक उनमें लगातार बनी रही। परिवार के जीवन-यापन हेतु उन्होंने छोटी-छोटी कई नौकरियां की और फिर बख्तियारपुर-राजगीर तक चलने वाली मार्टिन कम्पनी की छोटी लाइन रेलवे की नौकरी स्वीकार की। प्राईवेट से ही उन्होंने आई.ए. और बी.ए. की परीक्षाएं पास की। बख्तियारपुर-राजगीर रेलवे में ड्यूटी करते हुए उनकी भेंट अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बौद्ध विद्वान भिक्षु जगदीश कश्यप जी से हुई। वे उस समय भारत सरकार से अनुदान प्राप्त कर, बौद्ध त्रिपिटक के देवनागरीकरण करने और उनके सम्पादन के कार्य में लगे थे। डॉ. चतुर्भुज ने उनके मार्ग-दर्शन में बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास की। बौद्ध साहित्य और दर्शन का उन्हें ज्ञान मिला। फिर रेलवे की नौकरी छोड़ डॉ. चतुर्भुज जुड़ गये नव नालन्दा महाविहार से। देश-विदेश के नामी बौद्ध विद्वानों के साथ रहकर त्रिपिटक-सम्पादन- विभाग में चार साल तक पालि ग्रन्थों का देवनागरी में सम्पादन कार्य किया। यह हिन्दी और देवनागरी की विशिष्ट सेवा है। बौद्ध विषयक उनके अनेक नाटक और लेख प्रकाशित और प्रसारित हुए।

आकाशवाणी सेवा :-

29. संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज का चयन आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिशासी (Programme Executive) के पद पर सन् 1959 में हुआ।

30. आकाशवाणी की सेवा करते हुए उन्होंने पटना, राँची, भागलपुर और दरभंगा क्षेत्रों में रहकर हिन्दी साहित्य और रंगमंच की सेवा की। आकाशवाणी के लिए उन्होंने अनेक रेडियो नाटक, रेडियो फीचर और बौद्ध साहित्य पर आधारित अनेक वार्त्ताएं लिखीं। कई रेडियो नाटकों और फीचरों का प्रसारण अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं में विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित हुए। सन् 1986 ई. में आकाशवाणी, दरभंगा से केन्द्र निदेशक के पद को सुशोभित करते हुए वे सेवा निवृत्त हुए। उनके प्रमुख रेडियो नाटक और फीचर रहे हैं- गणतन्त्र की भूमि वैशाली, पलासी का धूमकेतू, नेत्रदान, लाल कुंवरी, सफेद हाथी, अवन्ती की राजकुमारी, तलवारों के साये में, नव नालन्दा महाविहार, कलम के जादूगर रामबृक्ष बेनीपुरी, मिलिन्द-प्रश्न, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बैकठपुर का शिवर्मंदिर, पाटलिपुत्र से पटना तक, बाजीराव-मस्तानी, झेलम के किनारे, जहाँआरा, हैदरअली, रेडियो नाट्य शृंखला के अन्तर्गत जातक कथा पर आधारित तेरह धारावाहिक नाटक आदि।

पुरस्कार/सम्मान :-

31. 1998 ई. में अनिल कुमार मुखर्जी शिखर सम्मान, सन् 2000 में दिल्ली में आयोजित शताब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी सेवा के लिए डॉ. चतुर्भुज शताब्दी सम्मान से सम्मानित, सन् 2004 ई. में राष्ट्र गौरव-राष्ट्रकवि दिनकर सम्मान से सम्मानित, श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर प्रबन्धक समिति द्वारा हिन्दी नाटक में विशिष्ट योगदान हेतु सन् 2004 ई. में सम्मान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने उन्हें वयोवृद्ध साहित्यकार के रूप में सन् 2004 ई. में सम्मानित किया। 'मीरकासिम' नाट्य-लेखन पर उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, साहित्यकार-सम्मान-समिति द्वारा उन्हें नाटक एवं रंगमंच के लिए सम्मान, इसी तरह और भी अनेक संस्थाओं ने उनके नाट्य-लेखन, रंगमंच के प्रति समर्पित, हिन्दी सेवा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हेतु सम्मानित किया है।

पत्रकारिता :-

32. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे प्रतिभाशाली लेखक-रंगकर्मी और प्रशासक रहे जिन्होंने अपने अनुभवों से, आगे की पीढ़ियों को लाभान्वित किया। सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में सेवा की। पटना आकर एक ओर वे यूनेस्को से मान्यता प्राप्त 'नाट्य-प्रशिक्षणालय', पटना में रंगकर्मियों को पारसी थियेटर की शिक्षा देते रहे, वहीं दूसरी ओर डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा पत्रकारिता और जन-संचार, डॉ. जाकिर हुसैन पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को भी रेडियो-पत्रकारिता और दूरदर्शन-पत्रकारिता की शिक्षा देते रहे। अपने जीवन-काल में डॉ. चतुर्भुज जहां भी रहे, रंगकर्मियों, पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को शिक्षित ही करते रहे। उनके आवास पर भी लोगों का आगमन लगातार जारी रहा। सम्भवत: उनकी सहृदयता और उनके ज्ञान का सागर देखकर ही लोग उन्हें गुरुजी कहकर संबोधित करते रहे और रंगकर्मियों के बीच वे नाटक के भीष्म-पितामह कहे जाते रहे।

33. तत्कालीन लोकप्रिय पत्र-पत्रिका विश्वमित्र, ब्लिज, प्रदीप, आर्यावर्त्त, इंडियन नेशन के नालंदा के स्थानीय संवाददाता।

डॉ. चतुर्भुज नाट्य-पत्रकारिता सम्मान- 2022

प्रभात रंजन

युवा पत्रकार एवं नाट्य समीक्षक

प्रभात रंजन

युवा पत्रकार और नाट्य-समीक्षक श्री प्रभात रंजन का जन्म 15 फरवरी, 1984 को हुआ। वर्ष 2008 में नालंदा खुला विश्वविद्यालय से जन संचार में मास्टर डिग्री, प्रथम श्रेणी से पास। हिंदी, अंग्रेजी, मगही भाषा के जानकार। वर्ष 2015 से दैनिक जागरण अखबार में संवाददाता के रूप में कार्य करते हुए आपकी पहचान बनी। इसके पूर्व कई इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सीएनईबी, 4 रियल न्यूज, आजाद न्यूज आदि चैनलों में कार्य करने के दौरान विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर बेहतरीन रिपोर्ट बनाई। वहीं दैनिक जागरण, पटना में संवाददाता के रूप में अपनी सेवा के दौरान कला संस्कृति, साहित्य समेत खोजी पत्रकारिता कर, अपनी पहचान बनाई। रंगमंच में बेहतरीन रिपोर्ट को लेकर 'प्रयास' नाट्य संस्था की ओर से वर्ष 2020 में 'नूर फातिमा सम्मान', वर्ष 2017 में 'बिहार रत्न कलाकार बटेश्वर नाथ श्रीवास्तव सम्मान' एवं हिंदी पत्रकारिता के लिए बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से 2018 में सम्मानित। आज भी पत्रकारिता और रंगमंच के प्रति समर्पित।

आयोजन समिति

सुमन कुमार
सचिव
कला-जागरण, पटना
09431066931

वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार का नाम रंग-क्षेत्र में कोई नया नहीं है। इन्होंने स्वीकार किया है कि रंगमंच ही मेरे जीने का मकसद है। आकाशवाणी, पटना के वरीय उद्घोषक रहे श्री कुमार, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अभिनय, निर्देशक, संयोजक, कोरियोग्राफर आदि विद्या में और भी सक्रिय हो गये। अपनी अभिनय क्षमता के बल पर इन्होंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गाँधी', प्रकाश झा की फिल्म 'दामूल', भोजपुरी फिल्म 'हमार देवदास', 'लागल नथुनिया के धक्का', 'लखैरा', श्याम बेनेगल के धारावाहिक- 'डिस्कवरी ऑफ इन्डिया' से जुड़े। कला-संगम, बिहार आर्ट थियेटर के बाद सन् 1990 में कला-जागरण की स्थापना कर, कला के क्षेत्र में इनकी तीव्रता और भी बढ़ गयी। सैकड़ों नाटक में अभिनय के बाद, वे वर्तमान युवा-पीढ़ी की नाट्य-कला को निखारने में लग गये हैं। श्री कुमार बिहार आर्ट थियेटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक भी हैं। इनके निर्देशन में तैयार महत्वपूर्ण नाटक हैं-सजा, डायन, फंसरी, आउ झोपड़ी सुलग गेल, अंधा युग, कारागार, सिकन्दर-पोरस, बन्द कमरे की आत्मा, बाबू जी का पासबुक, कालसर्पिणी, गोपा, पीरअली, आदि। अपने देश की विरासत ऐतिहासिक घटनाओं को आज की युवा पीढ़ी तक सजीव बनाये रखने के उद्देश्य से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में ऐतिहासिक नाट्योत्सव सन् 2010 से प्रारम्भ करने का एक क्रांतिकारी कदम सुमन कुमार का रहा है। सन् 2011 में इस नाट्योत्सव को विस्तार देकर अखिल भारतीय स्तर का बनाया जाना इनका सराहनीय कदम माना जायेगा। सन् 2014 में बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ रंगकर्मी के लिए सम्मानित हुए। सन् 2016 में इन्हें 'प्रांगण' नाट्य संस्था की ओर से पाटलिपुत्र अवार्ड से विभूषित किया गया।

डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी
सचिव
मगध कलाकार, पटना
09334525657

डॉ॰ चतुर्भुज द्वारा 1952 ई॰ में स्थापित नाट्य संस्था-'मगध कलाकार' के सचिव पद (सन् 1970 ई॰ से) को गौरवान्वित करने वाले डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी लेखन, अभिनय, निर्देशन, पत्रकारिता आदि विद्याओं से जुड़े रहे। सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार, पटना में सेवा करते हुए इन्होंने राज्य सरकार के महत्त्वपूर्ण आयोजनों का मंच संचालन किया। विशेष रूप से पटना के गाँधी मैदान में स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस जैसे राष्ट्रीय आयोजनों में डॉ॰ प्रियदर्शी की आलंकारिक उद्घोषणा पिछले 24 वर्षों से दर्शकों के बीच चिर-परिचित बनी रही है। बिहार में नाट्य प्रदर्शन को मनोरंजन कर से मुक्त कराने में, नाटक को रोजी-रोटी से जोड़ने के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्य शास्त्र विषय की पढ़ाई शुरू कराने में, प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में राशि एकत्र कराने आदि में मगध कलाकार के सचिव की हैसियत से नाटककार डॉ॰ चतुर्भुज के कष्ट-साध्य प्रयास में डॉ. अशोक प्रियदर्शी एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी बने रहे। रेडियो, दूरदर्शन, पटना से इनके लिखे कई नाटकों का प्रसारण के साथ सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के मंच से डॉ॰ प्रियदर्शी लिखित क्रान्तिकारी सुभाष, डोमकच, खुदीराम बोस, जैसे नाटकों का मंचन किया गया। डॉ॰ चतुर्भुज के सम्पूर्ण रंगमंचीय नाटकों का संकलन तीन खंडों में चतुर्भुज रचनावली के नाम से, और डॉ॰ चतुर्भुज की आत्मकथा-'मेरी रंगयात्रा', श्यामजी सहाय लिखित 'बुजुर्गों के लिए' पुस्तकों का सम्पादन और दैनिक जागरण की ओर से बुजुर्गों के लिए प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'बागवान' में संपादकीय सहयोग प्रदान किया है। दिसम्बर, 2012 में सरकारी सेवानिवृत्ति। 2010 से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव में डॉ॰ प्रियदर्शी, वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार के सहयोगी बन कर कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ रहे हैं। बिहार आर्ट थिएटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक डॉ. प्रियदर्शी इन दिनों मासिक पत्रिका 'राजनीति चाणक्य' को युवा पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाने में संलग्न हैं। साथ ही बुजुर्गों के लिए स्थापित नि:शुल्क सामाजिक संस्था 'पुरोधालय' के कार्यकारी अध्यक्ष हैं।

आयोजन समिति के सदस्य

गणेश सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, लाला राजकुमार प्रसाद, डॉ॰ किशोर सिन्हा, रमेश सिंह, प्राणशु, जगदीश दयानिधि, कुमार कश्यप, नीलम सिंह, सुनील कुमार सिन्हा, मदन शर्मा, शिवशंकर रत्नाकर, कृष्ण मोहन प्रसाद, आदिल रशीद, रोहित कुमार, कुमार अनुपम, कुमार आर्यदेव, कन्हैया प्रसाद, नीलेश्वर मिश्रा, शीलभद्र, हीरालाल, राजीव रंजन श्रीवास्तव, राजेश शुक्ला, फकीर मुहम्मद, किरण कुमारी, प्रेक्षा, प्रशस्ति, अनिमा, तूलिका, निधि, अनीस अंकुर, यामिनी, विजय कुमार, विशाल तिवारी, सुजीत कुमार, राजकुमार सिंह, सुमन पटेल, धर्मेश मेहता, जय प्रकाश, तनुष्का राय, रीना कुमारी, साहिल सिंह, अरविन्द सिंह, सुनीता भारती, विशाखा एवं प्रणय कुमार सिन्हा इत्यादि।

डॉ. चतुर्भुज की प्रयोगशाला – 'मगध कलाकार'

डॉ. अशोक प्रियदर्शी

किसी भी देश का साहित्य, समाज का दर्पण रहा है। काफी विदेशी यायावरों का भारतवर्ष में आगमन होता रहा। उन सभी लोगों ने अपने-अपने यात्रा संस्मरण में तत्कालीन भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, वास्तु-कला, निर्माण कला कौशल, शिल्प कला कौशल आदि का सजीव वर्णन किया है। उन्हीं वृत्तान्तों को आधार बनाकर श्री स्टीवेन्शन, डॉ. कनिंघम, डॉ. ब्लाश, डॉ. स्पूनर जैसे पुरातत्त्ववेत्ताओं ने बिहार प्रदेश में नालंदा, वैशाली, कुशीनारा, विक्रमशिला जैसे महत्वपूर्ण स्थलों की पहचान की और उन स्थलों की खुदाई के बाद वे स्थल पर्यटकों के लिए दर्शनीय स्थल बन गये।

प्राचीन काल से ही बिहार प्रदेश रत्नगर्भा रही है। राम-कृष्ण-बुद्ध- महावीर-चन्द्रगुप्त-चाणक्य-अशोक-आम्रपाली-कोशा-गुरु गोविन्द सिंह-याहिया मनेरी से लेकर राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण, दिनकर, बेनीपुरी, जगदीश कश्यप जैसे महापुरुषों की जन्मभूमि और कर्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है इस प्रदेश को।

चार वेदों से उत्पन्न पंचम वेद के रूप में नाट्य वेद को प्रतिष्ठा मिली है। ऐतिहासिक नाटकों के भीष्म-पितामह माने जाने वाले डॉ. चतुर्भुज का जन्म नालंदा जिला के बिहार शरीफ में स्थित महल पर मुहल्ले में 15 जनवरी, 1928 ई. को एक मध्यमवर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी लेखनी से हिन्दी नाट्य भंडार को सदैव समृद्ध करने का संकल्प लिया। नाटक के प्रति पूर्णतः समर्पित डॉ. चतुर्भुज की मान्यता थी कि शराब की आदत छोड़ी जा सकती है, लेकिन नाटक एक ऐसा नशा है, जिसकी आदत, मरने के बाद ही छूट पाती है। नाट्य आंदोलन के वे एक सक्रिय योद्धा रहे। ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के पीछे उनकी ऐतिहासिक लेखनी, अभिनय, निर्देशन, आयोजन और सबसे अधिक उनकी नाट्य प्रयोगशाला 'मगध आर्टिस्ट्स' (मगध कलाकार) सांस्कृतिक संस्था का योगदान कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

नाटककार डॉ. चतुर्भुज

बिहार के रंग-आंदोलन की तीव्रता प्रदान करने में पटना की रामलीला नाटक मंडली (1905), पटना नाटक मंडली (1946), इंडियन पीपुल्स एसोसिएशन (1947), उदयकला मंदिर (1947), कला निकेतन (1954), बिहार जन नाट्य संघ (1956), हिन्दी नाटक समाज (1922), बिहारी क्लब, बख्तियारपुर और तरुण भवतारणी नाट्य समिति, सोनपुर आदि की गतिविधियों का स्मरण अक्सर किया जाता रहेगा। इन्हीं सक्रिय नाट्य संस्थाओं की प्रेरणा से उस क्षेत्र के आस-पास और भी अनेक संघ-संगठनों की स्थापना हुई। उन्हीं में एक है बख्तियारपुर के बिहारी क्लब की प्रेरणा से सन् 1952 ई. में डॉ. चतुर्भुज द्वारा स्थापित नाट्य संस्था 'मगध आर्टिस्ट्स' अथवा मगध कलाकार। सच पूछा जाए तो इस संस्था के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज ने कई ऐसे कल्याणकारी कार्य किये, जो एक इतिहास बन गया। डॉ. चतुर्भुज ने जीवन भर मगध आर्टिस्ट्स (मगध कलाकार) संस्था को एक प्रयोगशाला के रूप में व्यवहार में लाया।

बख्तियारपुर-राजगीर छोटी लाईन के रेलवे कर्मचारियों के सहयोग से डॉ. विश्वनाथ वर्मा की अध्यक्षता में डॉ. चतुर्भुज ने मगध आर्टिस्ट्स की स्थापना बख्यिारपुर में की। विद्यार्थी जीवन में अपने पिताश्री स्व. प्रयाग नारायण की अंगुली पकड़कर वे बिहारी क्लब जाया करते थे। पूर्वाभ्यास के कमरे की व्यवस्था के साथ मंच निर्माण आदि में उनकी सक्रिय भूमिका होती थी। कुछ दिनों बाद वहीं पारसी नाटक 'भयंकर भूत' में एक स्त्री चरित्र के लिए उन्हें चयनित किया गया। अभिनय का उनका यह दौर 1990 तक चलता रहा, जब 1952 में स्थापित मगध कलाकार संस्था के वार्षिकोत्सव के अवसर पर खाकसार ने अपने निर्देशन में 'झांसी की रानी' की तैयारी शुरू

की। दीपक प्रियदर्शी, रूपक प्रियदर्शी, सुनीता सिन्हा आदि युवा कलाकारों ने डॉ. चतुर्भुज से जिद की उन्हें भी अभिनय करने की। अंत में उन्हें बच्चों की बात माननी पड़ी और डॉ. चतुर्भुज, अनन्त कुमार- दोनों वरीय रंगकर्मियों ने युवा रंगकर्मियों के साथ मिलकर, पटना में अभिनय किया। इस संस्था की प्रयोगशाला में युवा रंगकर्मियों के साथ मिलकर अभिनय करना एक प्रयोग था डॉ. चतुर्भुज का।

जब बिहारी क्लब के मंच पर उपलब्ध सभी ऐतिहासिक-पौराणिक पारसी नाटकों का मंचन कर लिया गया, तब युवा डॉ. चतुर्भुज ने अपना लिखा पहला नाटक 'मेघनाद' वरीय कलाकारों के बीच रखा। सभी ने उसे पसंद किया और अगला नाटक 'मेघनाद' ही अभिनीत किया गया। डॉ. चतुर्भुज के नाट्य-लेखन का उस समय का जो सिलसिला बना, वह सन् 2003 तक चलता रहा। फिर तो उन्होंने कलिंग विजय, अरावली का शेर, मीरकासिम, रावण, सिराजुद्दौला, कर्ण, कंस वध आदि लिखकर मगध कलाकार के मंच से उन्हें अपने निर्देशन में प्रस्तुत किया। स्वयं लेखक, अभिनेता, निर्देशक और आयोजक की कार्य-प्रणाली की ऊँचाइयों से वे परिचित रहे, इसलिए अभिनय के दौरान कलाकारों, आयोजनकर्ताओं की कठिनाइयों को उन्होंने काफी निकट से देखा था। अपनी लेखनी में संशोधन कर नाटकों का प्रकाशन कराया, ताकि दूसरी संस्थाओं के कलाकार, आयोजक, निर्देशक आदि को कोई असुविधा नहीं हो। अर्थाभाव के कारण नाटकों के प्रकाशन की समस्या हुई। लेकिन उनकी लेखनी से प्रभावित होकर बिहार सरकार, राजस्थान सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार और केन्द्र सरकार से बीच-बीच में प्रकाशन के लिए कुछ अनुदान मिलते रहे, जिससे डॉ. चतुर्भुज ने एक-एक कर सभी नाटकों का प्रकाशन कराया।

बख्तियारपुर-राजगीर छोटी लाइन की रेलवे बंद हो जाने के बाद बड़ी लाइन की ट्रेन चलने लगी। पुराने रेलकर्मी की नियुक्ति की गयी और किसी की पोस्टिंग मुगलसराय, किसी की अंडाल, किसी की झाझा तो किसी की दानापुर आदि स्टेशनों में हो गयी। अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्ति बौद्ध भिक्षु जगदीश काश्यप का सान्निध्य डॉ. चतुर्भुज को मिला। अध्ययन में रुचि रखने वाले डॉ. चतुर्भुज ने बिना किसी कॉलेज में पढ़ाई किए प्राइवेट से आई.ए., बी.ए. की परीक्षाएँ पास कर ली थी। भिक्षु जगदीश काश्यप की प्रेरणा से डॉ. चतुर्भुज ने पालि बौद्ध साहित्य में एम.ए. किया और रेलवे की नौकरी छोड़कर जुड़ गये पालि त्रिपिटक के देवनागरीकरण के संपादन में। 1959 में संघ लोक सेवा आयोग से चयनित होकर उनकी पोस्टिंग आकाशवाणी पटना में की गयी। अब डॉ. चतुर्भुज की लेखनी को एक नई उड़ान मिली। इतिहास-पुराण के ज्ञान के साथ अब बौद्ध साहित्य का भी उन्हें अनुभव मिल गया था। रंगमंचीय नाटकों के साथ रेडियो नाटक, रेडियो फीचर और दूरदर्शन के नाटक भी वे लिखते रहे, लेकिन जो आनंद उन्हें स्टेज नाट्य लेखन में मिला, उतना किसी अन्य विधा के नाटकों में नहीं मिला। अपनी लेखनी का श्रेय वे अपनी नाट्य प्रयोगशाला 'मगध आर्टिस्ट्स' और उससे जुड़े सहयोगी रंगकर्मियों को ही देते थे।

तत्कालीन उप-राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने नव नालंदा महाविहार के नव-निर्मित भवन का जब उद्घाटन किया था, तब भिक्षु जगदीश काश्यप के अनुरोध पर डॉ. चतुर्भुज ने मगध कलाकार की ओर से अपना लिखा नाटक 'कलिंग विजय' का मंचन किया था। 1957 ई. में बिहार सरकार की ओर से विभिन्न देशों के 20 बौद्ध भिक्षुओं को अपने निर्देशन में लेकर गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की झांकी दिल्ली में प्रदर्शित की। फिल्म अभिनेता पृथ्वी राज कपूर को बख्तियारपुर आमंत्रित कर मगध कलाकार के स्थायी मंच पर अपना नाट्य प्रर्दशन किया। उन्हीं की प्रेरणा से बाढ़ के नीलम पिक्चर पैलेस में प्रति रविवार को मगध कलाकार की ओर से टिकटेड नाट्य प्रदर्शन की शुरुआत की गयी।

ऐतिहासिक नाट्य-लेखन के पीछे डॉ. चतुर्भुज ने अपनी स्वार्थसिद्धि बताया था। सर्वप्रथम उनकी धारणा रही कि आज की भागदौड़ के युग में शुष्क ऐतिहासिक घटनाओं को लोग भूलते जा रहे हैं। आज की पीढ़ी भारत के गौरवशाली इतिहास को समझना नहीं चाहती है, लेकिन भारतीय इतिहास में ऐसी सभी घटनाओं का उल्लेख हो चुका है, जो आज भी समाज में घटित हो रही है और सम-सामयिक हैं। ऐतिहासिक घटनाएँ आज के समाज के निर्माण में अगर अहम भूमिका निभा सकती हैं, तो हमें सावधान भी करती हैं- घृणित घटनाओं और चरित्रों को दिखाकर। उनका कहना था कि ऐतिहासिक नाटकों के लेखन से पूर्व संबंधित उपलब्ध सामग्रियों को मैं गंभीरता से अध्ययन करता हूँ। मुझे काफी कुछ नई बातें जानने-समझने का मौका मिलता है। उन्हीं सामग्रियों में से लुप्तप्राय चरित्रों और घटनाओं का आज के संदर्भ में चिन्तन-मनन कर प्लॉट बनाता हूँ। मगध कलाकार में उपलब्ध कलाकारों की क्षमता का आकलन करता हूँ और उन्हीं को ध्यान में रखकर नाट्य-लेखन करता हूँ। मगध कलाकार के मंच पर अपने निर्देशन में जब सफलतापूर्वक उसका मंचन कर लेता हूँ, तब आंशिक संशोधन कर, उसका प्रकाशन कराता हूँ।

लेखन के समय डॉ. चतुर्भुज का ध्यान रहता था कि शुष्क, बोझिल ऐतिहासिक घटनाओं में ग्रामीण ऊबे नहीं, इसलिए संवादों में हास्य-व्यंग्य की सामग्री भी बनी होती थी। लेखनी में बंगला नाटककार डी.एल. राय को वे अपना गुरु मानते थे। महिला चरित्रों की समस्या को ध्यान में रखकर अपने नाटकों में उन्होंने एक या दो स्त्री चरित्र ही रखा, ताकि नाटक में सरसता बनी रहे। इतिहास की विस्तृत घटना को सीमित दृश्यों में बांधा। कई विदेशी चरित्रों को अपने नाटकों में रखकर डॉ. चतुर्भुज ने एक अलग नाट्य शैली प्रदान की। संबंधित देशों के लोकप्रिय शब्दों को अंगीकार कर उनका अनुवाद कर हिन्दी में संवाद लिखा, जिन्हें सुन ग्रामीण भी प्रसन्न होते रहे। रांची के रंगकर्मियों के अनुरोध पर उन्होंने बिना किसी स्त्री-चरित्र का एक नाटक लिखा- 'अरावली का शेर', जो काफी लोकप्रिय सिद्ध हुआ। आकाशवाणी पटना में रहते हुए जब अरविन्द गर्ल्स कॉलेज की प्रोफेसर श्रीमती लक्ष्मी देवी ने रानी की भूमिका करने के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की, तब डॉ. चतुर्भुज ने झांसी की रानी नाटक लिखा। आवाज के जादूगर भगवान प्रसाद ने जब चाणक्य की भूमिका करने की स्वीकृति प्रदान कर दी, तब उन्होंने विशाखदत्त लिखित मुद्राराक्षसम् का हिन्दी रंगमंचीय रूपान्तरण कर 'मुद्राराक्षस' का मंचन मगध कलाकार के मंच से किया। जब बंगलाभाषी देवयानी चौधरी ने शकुन्तला की भूमिका करने की अपनी स्वीकृति प्रदान की, तब डॉ. चतुर्भुज ने कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक का मंचीय नाट्य रूपांतरण कर 'शकुन्तला' का लेखन किया और मगध कलाकार की ओर से पटना में उसे मंचित किया। पटना दूरदर्शन की उच्च अधिकारी रही डॉ. रत्ना पुरकायस्था ने अपने विद्यार्थी जीवन में जब स्वीकृति प्रदान की जावेद रहमान अनुवादित "The Rani of Jhansi" में झांसी की रानी की भूमिका करने के लिए, तब मगध कलाकार की ओर से पटना में The Rani of Jhansi का मंचन रवीन्द्र भवन में किया गया। 'मगध कलाकार' प्रयोगशाला में यह भी एक प्रयोग था।

बिहार में नाटक करना एक समस्या थी। नाट्य प्रदर्शन से पूर्व, प्रशासन से अनुमति अनिवार्य थी। नाटक पर 'मनोरंजन कर' काफी लगता था। रंगकर्मी टिकट बेचने से घबराते थे। प्रदर्शन का खर्च निकालने के लिए लोग छिपकर कई रंगों का डोनेशन कार्ड छपवाते थे। डॉ. चतुर्भुज की लेखनी और उनकी संस्था मगध कलाकार से प्रशासन भी परिचित था। तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर से जब चतुर्भुज जी की भेंट हुई, तब उन्होंने रंगकर्मियों की समस्या उनके समक्ष रख दी। कर्पूरी ठाकुर ने स्थिति को गहराई से समझा और सुझाव दिया कि आप एक अनुरोध पत्र मुझे दे दें, ताकि आज की कैबिनेट में उसे पास करा लूँ और बिहार में नाटक पूर्णत: मनोरंजन कर से मुक्त करने का आदेश निकलवा दूँ। मगध आर्टिस्ट्स के पैड पर डॉ.चतुर्भुज ने अनुरोध-पत्र लिखा और कर्पूरी ठाकुर ने कैबिनेट से पास कराकर आदेश निकलवा दिया। आज भी इसका लाभ बिहार के रंगकर्मी उठा रहे हैं।

नाटक को रोजी-रोटी से जोड़ने के लिए डॉ. चतुर्भुज सदैव संघर्षशील रहे। आकाशवाणी दरभंगा में केन्द्र निदेशक पद पर रहते हुए जब एक समारोह में उनकी भेंट ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के तत्कालीन वायस चांसलर डा. सी.डी. सिंह से हुई, तब उन्होंने वी.सी. साहब को मगध कलाकार के पैड पर एक प्रस्ताव दिया- 'विश्वविद्यालय में नाट्यशास्त्र विषय की स्वतंत्र पढ़ाई शुरू की जाए।' डॉ.चतुर्भुज की लेखनी और नाट्य संस्था मगध कलाकार से वे पूर्व परिचित थे। तत्कालीन वायस चांसलर डॉ. सी.डी. सिंह ने तुरंत उसकी स्वीकृति दे दी और सीनेट से पास भी करा लिया। जनवरी 1986 में आकाशवाणी के केन्द्र निदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के बाद लगभग ढाई वर्षों तक डॉ. चतुर्भुज वहाँ प्रथम नाट्य शिक्षक बनकर रहे। इसी की प्रेरणा से बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय में नाट्यशास्त्र की स्वतंत्र पढ़ाई शुरू की गयी। इंटरमीडिएट काउंसिल में भी नाट्यशास्त्र एक विषय के रूप में स्वीकृत किया गया। मगध कलाकार और डॉ. चतुर्भुज की लेखनी ही मानी जाएगी कि गाँधी मैदान, पटना में गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन और परेड के साथ 1979 से झाँकियों का प्रदर्शन भी प्रारंभ किया गया। तत्कालीन पटना जिलाधिकारी आर.एन. सिन्हा इस कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।

मगध कलाकार ने अपने जितने भी प्रदर्शन किए, उनमें अधिकांश किसी-न-किसी कल्याणकारी कार्य के लिए ही किए गए। उनमें प्रमुख हैं- नेशनल डिफेंस फंड (18 जनवरी, 1966 रेलवे सिनेमा हॉल, खगौल), श्री चन्द्र उदासीन महाविद्यालय, हिलसा के सहायतार्थ (कॉलेज परिसर 22, 23 फरवरी, 1970), रांची समाज कल्याण समिति के सहायतार्थ (संत जेवियर स्कूल, डोरंडा हॉल में 12, 13 जुलाई, 1971), जमुई स्टेडियम के सहायतार्थ, मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष (झुमरी तिलैया, रामगढ़, हजारीबाग सिनेमा हॉल, नवंबर, 1970), महाविद्यालय, खगौल के सहायतार्थ Second Conference International Association of Buddhist Studies at Nalanda (19 Jan. 1980), On the occasion of Convocation at Nava Nalanda Mahavihars (6 Feb., 1977) आदि। 1976 में कोलकाता की इन्द्रनील फिल्म्स ने सर्वप्रथम छठ पूजा पर पूर्णकालिक फिल्म बनाने की योजना बनाई। छठ की गंभीरता का अध्ययन करने के लिए फिल्म प्रोड्यूशर महुआ डे ने डॉ. चतुर्भुज से सहायता मांगी। मगध कलाकार के सक्रिय रंगकर्मियों के साथ डॉ.

चतुर्भुज ने मदद करने का आश्वासन दिया। ठीक छठ के मौके पर इन्द्रनील फिल्म्स के निर्देशक, आर्ट डायरेक्टर, लेखक, प्रोड्यूसर आदि का जुटान डॉ. चतुर्भुज के सरकारी क्वार्टर छज्जूबाग, पटना में हुआ। ठेकुआ गूंधते-बनाते, छानते, अर्घ्य देने की विधि का बड़ी गंभीरता से प्रोड्यूसर महुआ डे ने अध्ययन किया। गीत गाते झुंड के साथ पूरी फिल्म टीम ने गंगा तट की ओर प्रस्थान किया। मगध कलाकार की तत्कालीन अध्यक्ष रहीं पद्मश्री विन्ध्यवासिनी देवी ने इस फिल्म के लिए गीत रचना की। ठीक इसी तरह का सेट-निर्माण कोलकाता में भी किया गया। गंगा घाट जाने से पूर्व प्रोड्यूसर ने नारियल फोड़ा और कैमरा ऑन किया गया। डॉ. चतुर्भुज की छोटी पुत्री विशाखा को 'छठ मईया की महिमा' की हिरोईन गायत्री शर्मा के बचपन की भूमिका दी गई। जीवन, पद्मा खन्ना, अभिभट्टाचार्य, मनीष के साथ फिल्म की पूरी शूटिंग कोलकाता में की गयी। पटना के अशोक सिनेमा हॉल में मगध कलाकार के सहयोग से हिन्दी में बनी फीचर फिल्म 'छठ मईया की महिमा' का प्रीमियर शो किया गया, तत्पश्चात् स्थानीय सत्कार होटल में प्रेस कांफ्रेंस किया गया।

डॉ. चतुर्भुज की अध्ययनशीलता ही कही जाएगी कि उन्होंने सरकारी सेवा से मुक्त होने के दस वर्षों बाद, पी-एच.डी. की डिग्री मगध विश्वविद्यालय से तब हासिल की थी, जब उनकी लेखनी और व्यक्तित्व पर कई विद्यार्थियों ने एम.फिल. और पी-एच.डी. की डिग्री विभिन्न विश्वविद्यालयों से पूर्व में ही प्राप्त कर ली थी।

डॉ. चतुर्भुज श्रीराम पर एक पूर्णकालिक मंचीय नाटक लिखना चाहते थे। लेखन आरंभ किया और शीर्षक देने लगे, तब वह नाटक 'राम' न होकर 'मेघनाद' बन गया। कई वर्षों बाद जब फिर उन्होंने विभिन्न भाषाओं की लगभग 47 रामायण का अध्ययन कर नाट्य-लेखन किया और शीर्षक देने लगे, तब वह 'राम' न होकर 'रावण' बन गया। कालिदास रंगालय के मंच पर मगध कलाकार के सहयोग से इस नाटक का प्रदर्शन प्रति रविवार और छुट्टियों के दिन लगातार कई महीनों तक होता रहा। इस नाटक की विशेषता के कारण इसका बंगला अनुवाद अनिल कुमार मुखर्जी ने किया। मैथिली, अंग्रेजी और तमिल भाषाओं में भी इसका अनुवाद किया गया। 10 अगस्त, 2009 को जब डॉ. चतुर्भुज जीवक हार्ट हॉस्पिटल के बेड पर थे, तब भी वे इशारे से जानकारी देते रहे कि वे 'राम' नाटक नहीं लिख सके। 11 अगस्त, 2009 की सुबह उन्होंने अपनी आँखें हमेशा के लिए बंद कर ली। जीवन भर उन्हें सालता रहा कि वे 'पुरुषोत्तम राम' पूर्णकालिक नाटक लिखने में असमर्थ रहे।

उनके निधन के बाद 2010 से मगध कलाकार 'कला जागरण' के साथ मिलकर प्रतिवर्ष पटना में सात दिवसीय अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन करती है। बिहार आर्ट थियेटर के साथ मिलकर अप्रैल महीने में त्रिदिवसीय हिन्दी रंगमंच दिवस का आयोजन करती है। मगध कलाकार की ओर से प्रतिवर्ष डॉ. चतुर्भुज की जयंती (15 जनवरी) के अवसर पर छात्रवृत्ति, रंग-पत्रकारिता सम्मान, श्रेष्ठ रंगकर्मी सम्मान और डॉ. चतुर्भुज शिखर सम्मान प्रदान किया जाता है। लोगों की जानकारी के लिए डॉ. चतुर्भुज का वेब साईट www.chaturbhujdrama.com उपलब्ध है, जिसमें उनकी सभी अनमोल पुस्तकें भी लोड कर दी गयी हैं। पाठक और शोधकर्ता इन पुस्तकों से लाभ उठा सकते हैं।

मो.-9334525656 / 9809810010

THE PATLIPUTRA CENTRAL CO-OPERATIVE BANK LTD.

"1960 से आपकी सेवा में" (Reg.No.-118/1960)

"मदनधारी भवन", एस.पी. वर्मा रोड, पटना–800001 (बिहार)

विशेष योजनाएँ

- ATM / KCC Card से खरीदारी की सुविधा।
- RTGS / NEFT की सुविधा।
- बाँकीपुर, मसौढ़ी, बाढ़ शाखा में Locker कि सुविधा
- DBTL की सुविधा।
- Mobile ATM Van द्वारा गाँव-गाँव में ATM के माध्यम से लेन-देन हेतु प्रशिक्षण की सुविधा।
- बाँकीपुर, बाढ़, पुनपुन, धनरुआ, मसौढ़ी, दानापुर, मालसलामी, फतुहा, नौबतपुर, दुल्हिनबाजार, पटना सिटी शाखाओं में ATM की सुविधा।

नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री, बिहार
घर बैठे
फोन पर
डॉक्टर
से सलाह
eSanjeevaniOPD
STAY HOME OPD
स्वस्थ बिहार
ई संजीवनी टेली कंसल्टेशन पिछले एक साल से बिहार में चल रहा है
1500 से अधिक डॉक्टर नि: शुल्क आपकी सेवा में
8 लाख लोगों ने लाभ उठाया
बीमारी कोई भी हो घर बैठे डॉक्टर से सलाह पाएं
आप ये एप्प गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें और इस सुविधा का लाभ उठाएं
बिहार सरकार
स्वास्थ्य विभाग
सोमवार से शनिवार सुबह 9 से शाम 4 बजे तक सेवा उपलब्ध
अधिक जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर 104 पर संपर्क करें

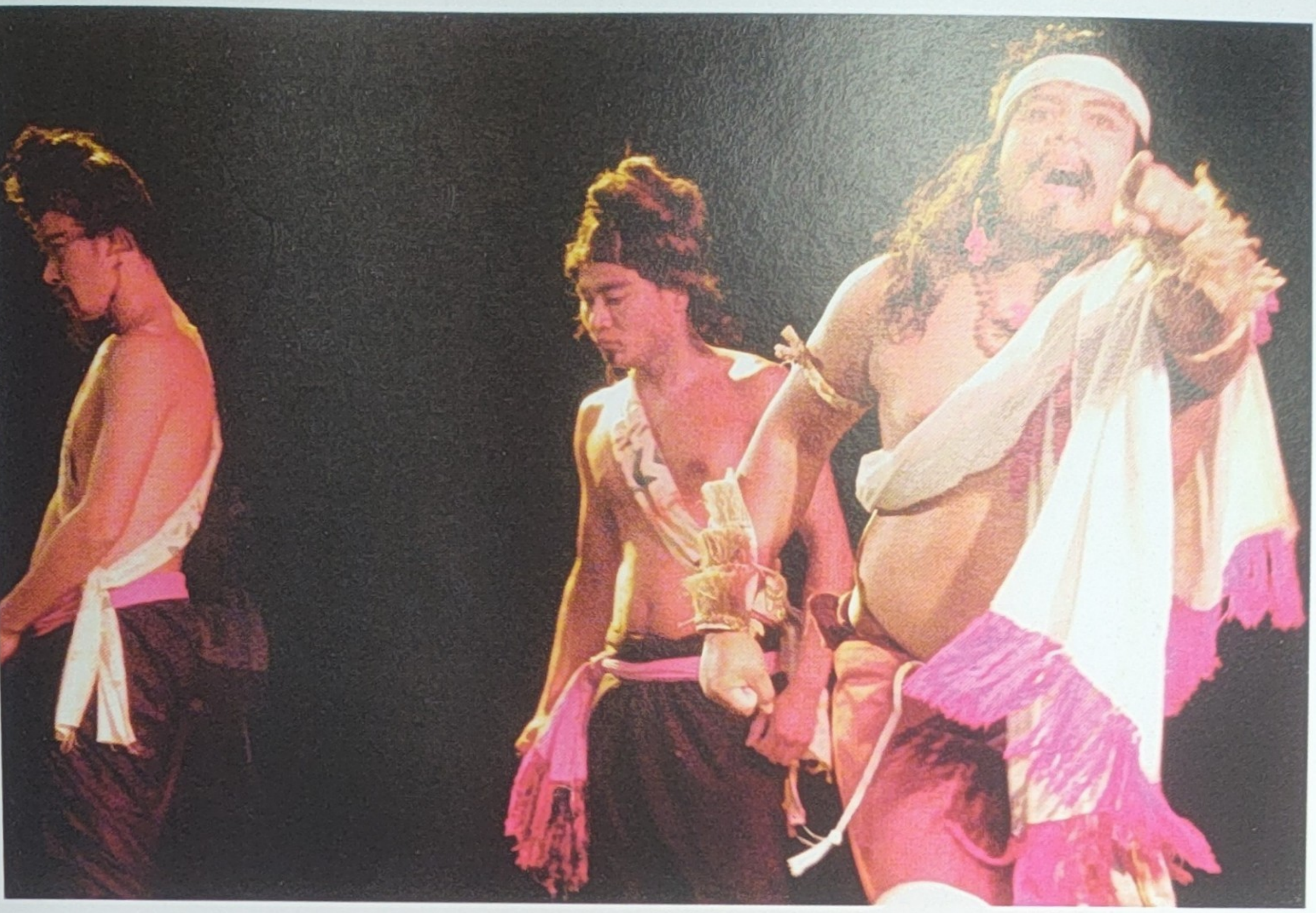

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव में प्रदर्शित नाटक की एक झलक।

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव में प्रदर्शित नाटक की एक झलक।

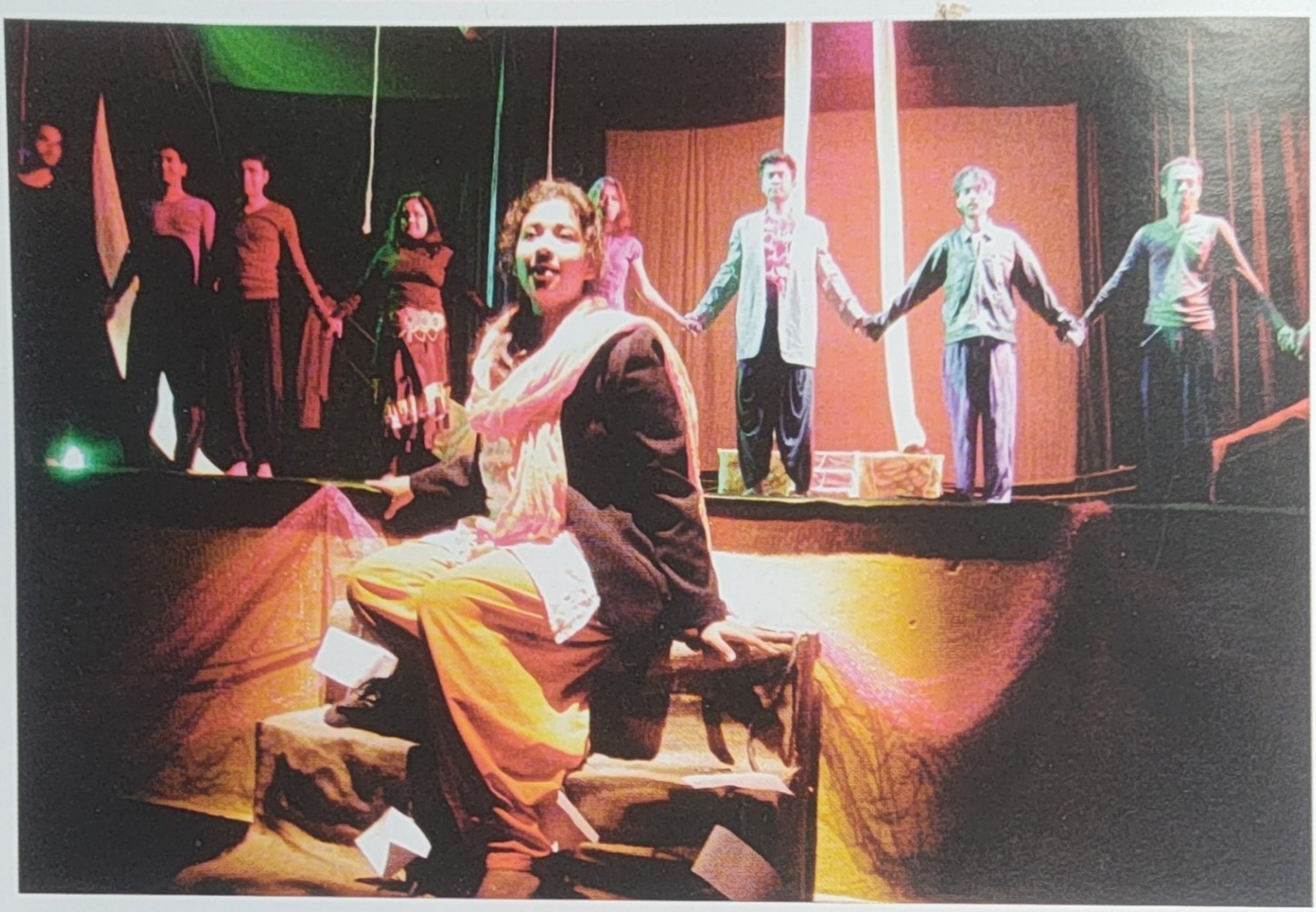

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का विहंगम दृश्य।

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का विहंगम दृश्य।

पीरअली

08 मार्च (मंगलवार), 2022

प्रस्तुति- कला जागरण, पटना

लेखक - डॉ. चतुर्भुज कुमार

परिकल्पना/निर्देशक- सुमन

निर्देशक- वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार का नाम रंग-क्षेत्र में कोई नया नहीं है। इन्होंने स्वीकार किया है कि रंगमंच ही मेरे जीवन का मकसद है। आकाशवाणी, पटना के वरीय उद्घोषक रहे श्री कुमार, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अभिनय, निर्देशक, संयोजक, कोरियोग्राफर आदि विद्या में और भी सक्रिय हो गये। अपनी अभिनय क्षमता के बल पर इन्होंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गाँधी', प्रकाश झा की फिल्म दामूल, भोजपुरी फिल्म हमार देवदास, लागल नथुनिया के धक्का, लखैरा, श्याम बेनेगल के धारावाहिक-डिसकवरी ऑफ इंडिया से जुड़े। कला-संगम, बिहार आर्ट थियेटर के बाद सन् 1990 में कला-जागरण की स्थापना कर कला के क्षेत्र में इनकी तीव्रता और भी बढ़ गयी। सैकड़ों नाटकों में अभिनय के बाद वे वर्तमान युवा पीढ़ी की नाट्य कला को निखारने में लग गये हैं। सन् 2014 में बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ रंगकर्मी के लिए सम्मानित हुए। सन् 2016 में इन्हें 'प्रांगण' नाट्य संस्था की ओर से पाटलिपुत्र अवार्ड से विभूषित किया गया।

कथासार- 1857 की क्रांति में अनेक वीर सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति दी। उन्हीं में एक सपूत था पीरअली। एक सूत्र के अनुसार पीरअली का जन्म भोजपुर के तरारी थाने के लकवा गाँव में हुआ था, लेकिन उसका अधिकांश समय पटना में ही बीता। पटना शहर में (सदर गली मोड़) उसकी एक किताब की दुकान थी जहाँ वह पुरानी किताबों में जिल्द लगाया करता था। जिल्द बंधी किताबों में लोगों के बीच आजादी का पैगाम लिखा पुर्जा डाल कर पीरअली अपना संदेश देता था। उस समय बहावियों का आंदोलन शिखर पर था। पीरअली, उस आंदोलन का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। उसका संबंध दूर-दूर के आजादी के दीवानों से था।

तत्कालीन पटना का कमिश्नर विलियम टेलर अपनी क्रूरता के लिए चर्चित था। उसे इसकी भनक लग गयी थी कि पीरअली गोरी सरकार के विरुद्ध लोगों में जहर भर रहा है। इसी बीच अफीम का एजेंट मिस्टर लायल पटना के आंदोलनकारियों द्वारा मारा जाता है। काफी लोगों को गिरफ्तार किया गया। विलियम टेलर की नजर पीरअली पर टिकी थी। दुकान पर छापे मारे गये। आजादी के दीवानों से पीरअली के हुए पत्राचार बरामद हुए।

3 जुलाई 1857। पीरअली गिरफ्तार हुआ। मि. लायल की हत्या का दोषारोपण पीरअली पर मढ़ा गया। कमिश्नर विलियम टेलर ने पीरअली का ट्रायल किया। साम-दाम-दंड-भेद की नीति अपना कर उसने पीरअली से उसके अन्य साथियों का नाम जानना चाहा। पीरअली अपनी जिद पर अड़ा रहा- उसने अपने साथियों के नाम नहीं बताये। लाचार होकर टेलर ने उसे पटना की बीच सड़क पर फाँसी देने की घोषणा की।

7 जुलाई, 1857। गाँधी मैदान के एक कोने पर स्थित पेड़ पर पीरअली को फाँसी दे दी गई। विलियम टेलर ने अपनी डायरी में लिखा है कि पीरअली को फाँसी देने के वक्त तक उसके चेहरे पर तनिक भी शिकन नहीं थी। अपनी क्रूरता के लिए चर्चित एक अंग्रेज अधिकारी की कलम से लिखी ये बातें सचमुच महत्वपूर्ण है।

पात्र-परिचय

मंच पर-

1. पीरअली - विकास मिश्रा
2. मास्टर सीताराम - अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा
3. मेहंदी अली - संजय राय
4. अब्दुल - मिथिलेश कुमार सिन्हा
5. कमिश्नर टेलर - कुमार सौरभ
6. लालाराम (पुत्र) - अभिषेक बिहारी
7. शीला (पुत्री) - आकांक्षा प्रिया
8. मि. लायल - शुभम सिंह राजपूत
9. शमशेर खाँ - सितेश कुमार सिंह
10. गोविंद राम - अजीत कुमार रवि
11. जल्लाद - हरिकृष्ण सिंह 'मुन्ना'
12. जीवन सिंह - रोबन राज सक्सेना
13. सिपाही - सौम्य कुमार
14. ग्रामीण - आरुषी, मनीष कुमार पाण्डेय, शांभवी पोद्दार, सनाया परिधि, आरती सिन्हा, प्रिंस राज, अरविन्द कुमार

मंच परे-

संगीत परि.- रामकृष्ण सिंह, संगीत संचालन- उपेन्द्र कुमार, मंच परि.- प्रदीप गांगुली, मंच सज्जा- आदर्श वैभव, संगीत संयोजन- सुधांशु सौरव, रूप सज्जा- अंजू कुमारी, मंच निर्माण- सुनील कुमार, वस्त्र विन्यास- रीना कुमारी, प्रकाश संचालन- राजकुमार शर्मा, वस्त्र सहयोग- एस. कृष्णन नायडू, पूर्वाभ्यास एवं प्रस्तुति समन्वय- अभिषेक बिहारी, रणविजय सिंह, सौरभ सिंह, आदर्श प्रियदर्शी, शिल्पी, स्वाति जायसवाल, प्रस्तुति प्रभारी- रोहित कुमार।

आभार- मगध कलाकार, बिहार आर्ट थियेटर परिवार एवं मीडिया जगत के सभी सहयोगी गण। **विशेष आभार**- गणेश प्रसाद सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, डॉ. किशोर सिन्हा, नीलेश्वर मिश्र, कन्हैया प्रसाद, सुषमा सिन्हा, पूनम ठाकुर

बहादुरशाह

9 मार्च (बुधवार), 2022

प्रस्तुति- पुण्यार्क कला निकेतन, पंडारक

लेखक - डॉ. चतुर्भुज आनन्द **निर्देशक/परिकल्पना : विजय**

निर्देशक- बिहार कलाश्री से अलंकृत श्री विजय आनंद ने रेलवे की सेवा करते हुए अपनी रंग-यात्रा की शुरुआत 25 वर्ष पूर्व की थी जो सतत् आज भी निरंतर जारी है । कठिन परिश्रम व ईमानदारी के साथ रंगकर्म को निभाने वाले विजय आनंद पटना विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में डिग्री हासिल करने के साथ-साथ इन्हें बहुत से पुरस्कारों से नवाजा गया। निर्माण कला मंच, इप्टा, प्राची थियेटर यूनिट, किरण कला निकेतन, कला मंच और पुण्यार्क कला निकेतन, पंडारक के नाटकों में भूमिकाएं की। साथ ही कई नाटकों का निर्देशन भी किया। प्रमुख निर्देशित नाटक हैं- आसमान जोगी, वंदेमातरम्, बिदेसिया, गबर घिचोर, हीर-रांझा, शीरी-फरहाद, देवदास, अमली, घुंघरू, बड़ा नटकिया कौन, कलिंग-विजय, माटी हिन्दुस्तान की, हारा हुआ सिकंदर, मेघनाद, झांसी की रानी, मुद्राराक्षस, अमली, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, टीपू सुल्तान, कालसर्पिणी, नूरजहां आदि ।

कथासार- सन् 1857 ई. में अंग्रेजी शासन समाप्त करने के लिए झांसी की रानी, नाना साहब, तात्या टोपे, वीर कुंवर सिंह, अमर सिंह, बेगम हजरत महल जैसे अनेकों स्वतंत्रता सेनानियों से आंदोलन का उदय हुआ। उन्हीं सब आंदोलनों में से एक मुगलों के अतीत गौरव को पुनर्जीवित करने बहादुरशाह जफर की बेगम जीनत महल, ख्वाब देख रही थी। बहादुर शाह ने जनरल बख्त खां को क्रांतिकारियों का प्रथम सेनापति नियुक्त किया। उसने क्रांतिकारियों को संगठित किया। इसी समय बहादुर शाह का सम्बंधी इलाही बख्श अंग्रेजों से मिल गया और रजबअली जैसे जासूस के साथ मिलकर, अंग्रेजों को समस्त गुप्त सूचनाएं पहुंचाने लगा। क्रांतिकारियों और अंग्रेजों के बीच दिल्ली के अंदर भीषण युद्ध हुआ और अंत में अंग्रेजों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। सेनापति बख्त खां व गौस खां ने बहादुर शाह को दिल्ली से बाहर चलकर युद्ध करने की सलाह दी, परंतु इलाही बख्श के बहकावे में आकर उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। इलाही बख्श के परामर्श पर बादशाह ने जान बचाने के उद्देश्य से कैप्टन हडसन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। हडसन ने बहादुर शाह तथा उनकी बेगम जीनत महल को बंदी बनाकर गुप्त रूप से लाल किले में भेज दिया। उनके दो पुत्रों मिर्जा मुगल व जबांबख्त और एक पौत्र की गोली मारकर हत्या कर दी। तीनों राजपुत्रों का शरीर चांदनी चौक के बड़े दरीबे के दरवाजे पर फेंक दिया गया। इस तरह बाबर व अकबर का अंतिम चिराग बहादुरशाह को बुझा दिया गया।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद जब बादशाह जफर को गिरफ्तार किया गया तो अंग्रेज सैन्य अधिकारी हडसन ने उन पर कटाक्ष करते हुए यह शेर कहा- ''दम में दम नहीं, अब खैर मांगो जान की ए जफर अब म्यान हो चुकी है, शमशीर (तलवार) हिन्दुस्तान की..!!'' इस पर जफर ने करारा जवाब देते हुए कहा था-''हिन्दियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की, तख्ते लंदन तक चलेगी तेग (तलवार) हिन्दुस्तान की..!!''

यह ऐतिहासिक नाटक जागृत राष्ट्रवाद का संदेश देने के साथ-साथ समकालीन राजनैतिक परिदृश्यों का भी चित्रण करता है।

पात्र-परिचय

पात्र - परिचय :-

बहादुरशाह	- रवि शंकर कुमार
बख़्त खाँ	- अक्षय कुमार
गौस खाँ	- राजेश कुमार
मिर्जा मुगल	- अभिषेक आनंद
जबाँबख्त	- अजय कुमार
मिर्जा इलाहीबख़्श	- दिनेश कुमार
रजबअली	- संजय जायसवाल
विल्सन	- राहुल कुमार
निकोल्सन	- कुन्दन कुमार गुप्ता
हडसन	- विजय आनंद
जीनतमहल	- वीणा गुप्ता
सैनिक	- उमेश कुमार, राहुल रंजन चतुर्वेदी, पप्पू कुमार, संतोष कुमार, विवेक कुमार, राकेश कुमार।
मेकअप	- ब्लू आनंद
वस्त्र विन्यास	- अशोक कुमार
मंच सज्जा	- मनोज कुमार सिंह
प्रकाश परिकल्पना	- अभिषेक आनंद
ध्वनि	- राहुल रंजन चतुर्वेदी
प्रकाश	- धर्मेश मेहता
प्रस्तुति नियंत्रक	- संजीव रंजन

कर्णभारम

10 मार्च (गुरुवार), 2022

प्रस्तुति- किलकारी, पटना की प्रस्तुति

लेखक- नाट्य रूपांतरण- नरेन्द्र बहादुर सिंह मुकुल

निर्देशक- नीरज कुंदेर, स. निर्देशक- रवि भूषण कुमार

कथासार- कर्ण महाभारत के महानायक हैं। वेद व्यास द्वारा रचित एवं नरेन्द्र बहादुर द्वारा नाट्य रूपांतरित इस नाटक के मुख्य नायक कर्ण हैं।

कर्ण की छवि आज भी भारतीय जनमानस में एक ऐसे महायोद्धा की है जो जीवन भर प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ता रहा। कर्ण को कभी भी यह सब नहीं मिला जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी था।

उक्त नाटक के माध्यम से कर्ण के जीवन को एक खास शैली में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

समूह के बारे में में- बिहार के साधनहीन बच्चों की प्रतिभा को निखारने तथा अपनी कला एवं संस्कृति के प्रति उनमें रुझान पैदा करने के लिए राज्य सरकार ने बिहार बाल भवन की स्थावना की योजना बनायी ताकि बच्चों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक पहल की जा सके। शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के द्वारा 30 मई, 2008 को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 21, 1860 के तहत पटना में बिहार बाल भवन 'किलकारी' की स्थापना की गयी।

किलकारी बच्चों की रचनात्मकता को विकसित करने की काशिश करती है। किलकारी 8 से 16 साल के बच्चों के लिए स्वस्थ, तनावमुक्त और आनंदमय वातावरण प्रदान करता है। यहाँ बच्चों को उनके रचनात्मक विकास के लिए प्रशिक्षण और उनकी रुचि के अनुसार प्रदर्शन करने के कई अवसर मिलते हैं। बाल भवन बच्चों को वे अवसर प्रदार करता है, जिससे वे अपने घरों या स्कूलों में वंचित रह जाते हैं, जैसे- बच्चों की आवाज की सुनवाई हो, उन्हें अपनी क्षमताओं को पहचानने का अवसर मिले, उनमें सृजनात्मकता एवं वैज्ञानिक सोच विकसित हो, आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता का विकास हो, व्यवहारिक ज्ञान एवं मानवीय मूल्यों का बीजारोपण हो।

पात्र-परिचय

मंच पर

कर्ण - सैंटी कुमार
कुंति - अंकिता शर्मा
राधा - वर्षा कुमारी
अधिरथ - सानु कुमार
कृष्ण - राहुल कुमार
अर्जुन - संटू कुमार
ब्राह्मण - चिंटू कुमार
परशुराम - विनोद कुमार
सूर्य - आयुषी कुमारी
इंद्र - हेमा कुमारी
शल्यराज - विनोद कुमार
सूत्रधार - संटू कुमार, सैंटी कुमार

कोरस - नीलम कुमारी, जीतू कुमार, जीवित कुमार, अमित राज, सानू कुमार, अंश राज अमन।

मंच परे

संगीत/इफैक्ट - अभिषेक राज ड्रामेबाज
वेषभूषा - अंकिता शर्मा, आयुषी कुमारी
वस्त्र विन्यास - अंकिता शर्मा
सेट एवं प्रॉप्स - प्रकाश कुमार भारती
लाइट - विनय कुमार
प्रस्तुति - 'किलकारी' बिहार बाल भवन, पटना

दि वैशाली शहरी विकास को–ऑपरेटिव बैंक लि., हाजीपुर

THE VSV CO-OPERATIVE BANK LTD. HAJIPUR

HEAD OFFICE : VAISHALI HOTEL, CINEMA ROAD
HAJIPUR (VAISHALI) Pin Code-844101
E-mail : vsvbank@gmail.com
Website : www.vsvbank.com
Tel No. : 06224-260144

VSV CO-OP BANK LTD.

The Vaishali Shahari Vikas Co-operative Bank Ltd., Hajipur is a Primary Co-operative Society, which is registered under the Bihar & Orissa Co-operative Societies Act, 1935 (Act VI of 1935) in 1988 and its licensed granted by RBI in 1997.

- **Licence Number : UBD, BIHAR 1419 P dated 17.06.1997** from the RBI, under the provisions of Section 22 of the Banking Regulation Act, 1949 (As Applicable to Cooperative Societies).
- **Registration Number : 07/HQR/88 dated 15.06.1988** from Registrar of Co-operative Societies under the Bihar & Orissa Co-operative Societies Act, 1935 (Act VI of 1935)

Financial Position(in Lakh)

Particulars	31/03/2021	31/01/2022	Particulars	31/03/2021	31/01/2022
Paid up Capital	300.71	418.77	Gross NPA %	0.01%	0.01%
Reserves & Surplus	374.59	421.70	Net NPA	0.00	0.00
Deposit	7702.80	8521.32	Net NPA%	0.00%	0.00%
Loan & Advances	4584.31	6811.29	Gross Profit	16685511	14404112
CD Ratio	59.51	79.93	CRAR	16.07%	14.91%
Gross NPA	0.59	0.59	Net worth	663.80	840.47

CORE BANKING SOLUTION (CBS)

Our Services
RTGS, NEFT, SMS Banking
E-Payments Facilities
POS/E. Commerce Transaction Facility
ATM-cum-Debit Card / POS Machine
CTS/NACH/DBTL/PFMS Facilities
Daily Deposit Collection by online Machine
Deposits Insured under DICGC
Accidental Insurance for Debit Card Holder
Personalised Cheque Book
Statement of Account / Balance by SMS

Loan Facilities
Small Scale Industry & Cottege
Agriculture & Allied Loan
Home Loan & Property Loan
Project Loan Against Property
Personal / Term Loan
Vehicle Loan / LAD
Cash Credit & OD Loan

Our Branches

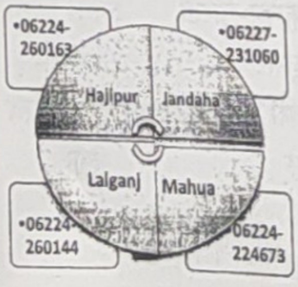

Period	Public	Senior Citizens
7 days to 45 days	5.50%	6.00%
46 days to 179 days	6.50%	7.00%
180 days to 210 days	6.75%	7.25%
211 days to less than 1 year	7.00%	7.50%
1 year to 455 days	8.10%	8.60%
456 days to less than 2 years	8.10%	8.60%
2 year to less than 3 years	8.40%	8.90%
3 year to less than 5 years	8.50%	9.00%
5 years and upto 10 year	8.60%	9.10%

Interest rates are subject to directive from RBI and the Bank's Management,
For more details contact to the Branch Manager - 7541819985

बिहार राज्य हस्तकरघा बुनकर सहयोग संघ लि.

राजेन्द्र नगर, पटना

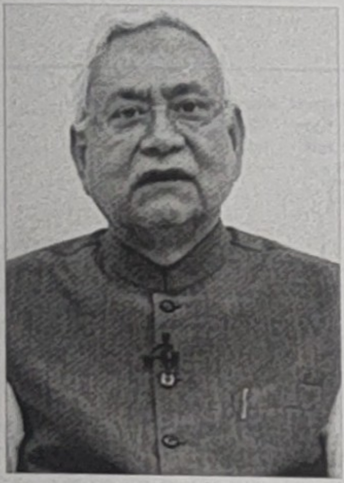

श्री नीतीश कुमार कुमार
मुख्यमंत्री, बिहार

श्री सैयद शहनवाज हुसैन
उद्योग मंत्री, बिहार सरकार

बिहार स्टेट हैण्डलूम विभर्स को-ऑपरेटिव यूनियन लि. (बिश्कोटेक्स) राजेन्द्र नगर, पटना, हस्तकरघा प्रक्षेत्र की मल्टी स्टेट को-ऑपरेटिव सोसाईटी है। यह बिहार एवं झारखंड राज्य की शीर्ष संस्था है। माननीय **मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी** एवं **माननीय मंत्री, उद्योग श्री सैयद शहनवाज हुसैन जी** के नेतृत्व में हस्तकरघा उद्योग और ऊँचाइयों पर पहुँचेगा।

निवेदक
मो. नकीब अहमद
अध्यक्ष
बिहार राज्य हस्तकरघा बुनकर सहयोग संघ लि.
राजेन्द्र नगर, पटना

Code : 06182 { Ph. : 232416
Fax : 239072

CENTRAL CO-OPERATIVE BANK LTD., ARA

Tapeshwar Bhawan, Mangal Pandey Path, Ara, Bhojpur

Ref..........   Date..........

बैंक की वित्तीय स्थिति एक नजर में

(राशि लाख में)

वर्ष	2020-21	2021-22 as on Jan 2022
पूँजी एवं सुरक्षित कोष	3452.84	2864.40
जमा	43400.01	44274.53
विनिवेश	32435.21	33620.51
ऋण एवं अग्रिम	25253.25	32496.32
ऋण साख जमा अनुपालन	39.02%	73.40%
कार्यशील पूँजी	53658.62	65749.53

सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि., आरा
आपका बैंक अपना बैंक

अन्य सुविधाएँ :- पूर्णतः आधुनिक बैंकिंग सुविधा

B+ रेटिंग बैंक, सभी शाखाएँ पूर्णतः कोर बैंकिंग / RTGS / NEFT / DBTL रूपे एवं डेबिट कार्ड की सुविधा

16 शाखाओं में ए.टी.एम. / 3 मोबाईल ATM Van की सुविधा / आकर्षक ब्याज दर।

सभी तरह की व्यवसायिक ऋण की सुविधा उपलब्ध।

मो. निसार अहमद
प्रबंध निदेशक

सत्येन्द्र नारायण सिंह
अध्यक्ष

1914 से विश्वास का प्रतीक

बिहार राज्य सहकारी बैंक लिमिटेड

अशोक राजपथ, पटना-800004

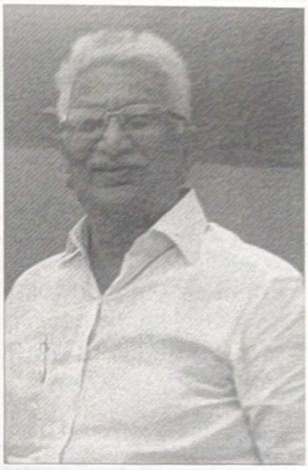

अध्यक्ष

श्री रमेश चन्द्र चौबे

- सभी शाखाएँ सी.बी.एस. प्लेटफॉर्म पर।
- RTGS / NEFT / IMPS एवं अन्य सभी प्रकार की कम्प्यूटरीकृत सुविधा।
- 24 घंटे एटीएम, डिजिटल बैंकिंग, मोबाईल ए.टी.एम. वैन से बैंकिंग सुविधाएँ।
- सभी जमा खाताओं पर आकर्षक ब्याज ।
- अभिकर्त्ता के माध्यम से मोबाईल ऐप के द्वारा दैनिक जमा योजना जिससे छोटी-मोटी राशि जमा कर ब्याज सहित एक बड़ी राशि।
- जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों के माध्यम से मो. 3,00,000/- (तीन लाख) रुपये तक कृषि ऋण की सुविधा। किसान क्रेडिट कार्ड के द्वारा तीन लाख रुपये तक का कृषि ऋण मात्र 7% ब्याज दर पर उपलब्ध।
- कार्डधारियों को व्यक्तिगत दुर्घटना का लाभ जिसके तहत् किसी प्रकार की दुर्घटना में मृत्यु होने पर 50,000/- एवं आंशिक अपंगता पर 25,000/- रुपये देने का प्रावधान ।
- वर्ष 2004 से लगातार लाभ में।

हमारी अन्य विभिन्न योजनाएँ

1. प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना
2. अटल पेंशन योजना
3. जन-धन योजना
4. प्रधानमंत्री आवास योजना
5. प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना
6. सीनियर सिटीजन जमा योजना

कृपया विशेष जानकारी हेतु हमारे निकटतम शाखा में सम्पर्क करें।

(अखिलेश कुमार)
प्रबंध निदेशक

(रमेश चन्द्र चौबे)
अध्यक्ष

स्थापित- 2011 निबंधन संख्या-914/2015-16

महान नाटककार स्व. डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरण के क्षेत्र में समर्पित

चमन वेलफेयर ट्रस्ट

की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

Website : chamanwelfaretrust.org.
Email : chamanwelfaretrust@gmail.com
: ksrakshit5@gmail.com
Mob. : 9334123150

106, श्रीकृष्ण नगर,
पटना-800001 (बिहार)
भारत

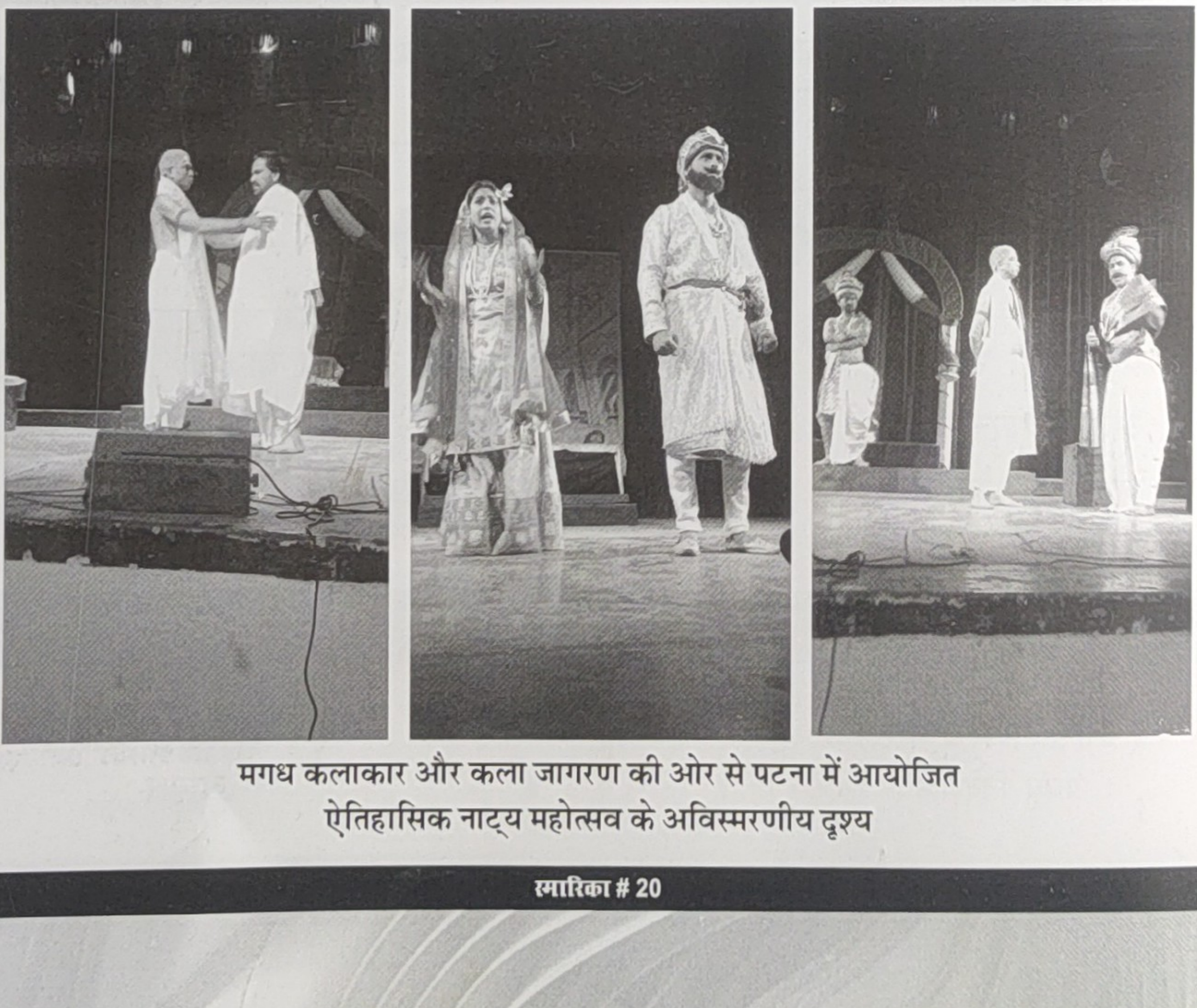

मगध कलाकार और कला जागरण की ओर से पटना में आयोजित
ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के अविस्मरणीय दृश्य

जय सहकारिता

जय किसान

दि पूर्णियाँ डिस्ट्रीक्ट सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि., पूर्णियाँ

दि पूर्णियाँ डिस्ट्रीक्ट सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि., पूर्णियाँ

(कार्यक्षेत्र- पूर्णियाँ, अररिया और किशनगंज जिलान्तर्गत)

निबंधन संख्या- 10 पी.एन. 1960

लाइसेन्स सं.- ग्रा.आऋबि. जि.के.स.ब./पैअ 29/2012-13

बैंक की प्रमुख योजनाएँ

ऋण योजनाएँ

1. किसान क्रेडिट ऋण
2. कन्जूमर लोन
3. ट्रेडिंग लोन
4. कैश क्रेडिट लोन
5. लघु उद्योग ऋण
6. डेयरी, पोल्ट्री पशुपालन ऋण
7. लघु वाहन ऋण
8. कैश क्रेडिट (फसल अधिप्राप्ति) ऋण

जमा योजनाएँ

1. बचत जमा योजनाएँ
2. आवर्त्ती जमा योजनाएँ
3. लक्ष्मी जमा योजना
4. अल्पावधि जमा योजना
5. अल्प बचत योजना

अन्य योजनाएँ

धान / गेहूँ अधिप्राप्ति-

किसानों के हितार्थ उनके उपज यथा धान/गेहूँ अधिप्राप्ति की सुविधा योजना के अंतर्गत किसानों द्वारा उनके अपने पैक्स के अंदर ही धान क्रय-केन्द्र में विक्रय कर बैंक से सीधे फसल का भुगतान किया जाता है।

हीरा प्रसाद सिंह

अध्यक्ष

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में मगध कलाकार और कला-जागरण द्वारा आयोजित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य समारोह में नाट्य-प्रस्तुतियाँ

20 से 26 फरवरी, 2011

20/2/11	वीरागंणा, पटना
21/2/11	यहूदी की लड़की, शाहजहाँपुर
22/2/11	1. कर्ण, पटना
	2. हिक्की सायबेर गजट, कोलकाता
23/2/11	विशु राउत, भागलपुर
24/2/11	माटी हिन्दुस्तान की, पंडारक
25/2/11	सीता बनवास, पटना
26/2/11	कुँवर सिंह, पटना

8 से 14 फरवरी 2012

8/2/12	उर्वशी, पटना
9/2/12	1. अपनी कथा कहो बिहार
	2. हारा हुआ सिकन्दर, पटना
10/2/12	कसम (ी्ज्ञ)ए मणिपुर
11/2/12	गोपा, पटना
12/2/12	सत्य हरिश्चन्द्र, पटना
13/2/12	शताब्दी के स्वर
14/2/12	पाटलिपुत्र का राजकुमार, पटना

19 से 25 फरवरी 2013

19/2/13	कर्णभारम, बेगूसराय
19/2/13	उत्तर प्रियदर्शी, पटना
20/2/13	औरंगजेब की आखिरी रात, गुड़गाँव हरियाणा
21/2/13	आम्रपाली, पटना
21/2/13	रश्मिरथी, पण्डारक
22/2/13	चाणक्य, पटना
23/2/13	टीपू सुल्तान, मणिपुर
24/2/13	शॉपग्रस्त, पटना
25/2/13	कारागार, सहरसा

17 से 23 फरवरी 2014

17/2/14	कालिगुला, पटना
18/2/14	तोमार डाके, कोलकाता
19/2/14	काल सर्पिणी, पटना
20/2/14	नवा खोरी चिनाय, मणिपुर
21/2/14	नील कंठ निराला, पटना
22/2/14	मेघनाद, पंडारक
23/2/14	पोरस सिकन्दर, पटना

11 से 17 फरवरी 2015

11/2/15	अंधा युग, पटना
12/2/15	री-एक्सप्लोरेशन, कोलकाता
13/2/15	लैला मजनूँ, इलाहाबाद
14/2/15	भामाशाह, नई दिल्ली
15/2/15	सिराजुद्दौला, पंडारक
16/2/15	अंगुलीमाल, भागलपुर
17/2/15	केंग्डू, मणिपुर

17-20 फरवरी, 2016

17/2/16	सम्राट अशोक, पटना
18/2/16	स्पार्टकस लेट्स फाइट, कोलकाता
19/2/16	मीरकासिम, पण्डारक
20/2/16	चाणक्य, बरौनी (बेगूसराय)

02-06 मार्च, 2017

02/3/17	शेरशाह सूरी, पटना
03/3/17	औरत की जंग, लखनऊ
04/3/17	टीपू सुल्तान, पण्डारक
05/3/17	साकार होता सपना, राँची
06/3/17	गांधी के चरण चम्पारण में, पटना

17-20 फरवरी, 2018

17/2/18	चार बांस चौबीस गज, पूर्णिया
18/2/18	एकलव्य, मध्य प्रदेश
18/2/18	एण्टिगोनी, कोलकाता
19/2/18	गोपा, पटना
20/2/18	झांसी की रानी, पंडारक
20/2/18	शम्बूक वध, पटना

04-06 मार्च, 2019

04/03/2019	विजेता, पटना
05/03/2019	पीरअली, वैशाली
06/03/2019	बुद्धम शरणम् गच्छामि, पटना
06/03/2019	कालसर्पिणी, पण्डारक

02-04 मार्च, 2020

02/03/2020	शिवाजी, पटना
03/03/2020	मोर्चे पर, पुनपुन (पटना)
04/03/2020	नूरजहाँ, पंडारक (पटना)

02-04 मार्च, 2021

02/03/2021	अरावली का शेर, पटना
03/03/2021	बुद्धं शरणं गच्छामि, पटना
04/03/2021	मुद्राराक्षस, पंडारक

मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) की ओर से
डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में दिये जाने वाले सम्मान

मगध कलाकार और बिहार आर्ट थियेटर के सौजन्य से डॉ चतुर्भुज शिखर सम्मानः-

सन् 2010 : डॉ. जितेन्द्र सहाय- शल्य चिकित्सक और नाटककार
बेस्ट एक्टर : श्री अखिलेश्वर प्र. सिन्हा, **बेस्ट एक्ट्रेस :** श्रीमती सुचित्रा सिन्हा।
सन् 2011 : श्री गोपाल शरण- रंगमंच, रेडियो और फिल्म के कलाकार
बेस्ट एक्टर : श्री नन्दलाल सिंह **बेस्ट एक्ट्रेस :** सुश्री उज्ज्वला गांगुली, **श्रेष्ठ निर्देशक :** उपेन्द्र कुमार
सन् 2012 : श्री कृष्णानन्द- ऐतिहासिक उपन्यासकार, वरिष्ठ पत्रकार और नाट्य समीक्षक
बेस्ट एक्टर : श्री अमित श्रीवास्तव, **बेस्ट एक्ट्रेसः** श्रीमती अनीता कुमारी वर्मा
सन् 2013 : श्री गणेश सिन्हा-नाट्य निर्देशक, अभिनेता, और रंग-परामर्शी।
बेस्ट एक्टर : श्री राजवर्द्धन, **बेस्ट एक्ट्रेस :** सुश्री सविता श्रीवास्तव
सन् 2014 : श्री बच्चन लाल- अभिनेता, मेकअप मैन,
सन् 2015 : श्री रामदास राही- स्व. भिखारी ठाकुर के परिजन जिन्होंने उनकी अनमोल रचनाओं को संरक्षित रखा।
बेस्ट ऐक्टर : कुणाल कौशल, **बेस्ट ऐक्ट्रेस :** पूजा कुमारी
सन् 2016 : श्री अनिल पतंग- संपादक, नाटककार, कला साधक
सन् 2017 : प्रो. (डॉ.) समी खाँ, वरिष्ठ रंगकर्मी और रग चिंतक
सन् 2018 : श्री सतीश प्रसाद सिन्हा, व्यंग्य नाटककार
सन् 2019 : श्री अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा- रंगमंच, रेडियो, टेलीविजन कलाकार और नाटककार।

मगध कलाकार की ओर से डॉ. चतुर्भुज छात्रवृत्ति सम्मानः-

सन् 2010 : श्री अमित गुप्ता : श्रीमती रंजीता जयसवाल,
सन् 2011 : श्री सुनील कुमार सिंह, सुश्री साक्षी प्रिया,
सन् 2012 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, श्री राहुल कुमार
सन् 2013 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, मो. आसिफ इकबाल
सन् 2014 : सुश्री मारिया प्रवीण, विशाल कुमार तिवारी
सन् 2015 : सुश्री कनीज फातिमा, श्री उदित कुमार
सन् 2016 : सुश्री कमल प्रिय, श्री श्याम बिहारी ठाकुर
सन! 2017 : श्री नीतीश प्रियदर्शी, सुश्री अदिति
सन! 2018 : श्री अभिषेक राज, सुश्री प्रियंशी

मगध कलाकार और कला-जागरण की ओर से डॉ. चतुर्भुज नाटक-पत्रकारिता सम्मान

सन् 2012 : श्री आशीष कुमार मिश्र- रंगकर्मी और पत्रकार, दैनिक हिन्दुस्तान, पटना।
सन् 2013 : श्री दीनानाथ साहनी- लेखक, पत्रकार और रंग समीक्षक, दैनिक जागरण, पटना।
सन् 2014 : श्री ध्रुव कुमार- रंगकर्मी, लेखक, स्वतन्त्र पत्रकार।
सन् 2015 : श्री साक़िब इक़बाल खाँ- रंग-पत्रकार, दैनिक भास्कर, पटना।
सन् 2016 : श्री रविराज पटेल- संस्थापक-सचिव, सिनेयात्रा/लेखक, पत्रकार, व्याख्याता, एस.ए.ई. कॉलेज, जमुई।
सन् 2017 : डॉ. लक्ष्मी कान्त सजल, लेखक (हिन्दी, मैथिली), पत्रकार, अनुवादक, दैनिक आज, पटना।
सन् 2018 : श्री सुमित कुमार, मुख्य संवाददाता, प्रभात खबर, पटना
सन् 2019 : श्री किशोर केशव, समाचार संपादक, राष्ट्रीय सहारा, पटना
सन् 2020 : श्री दीपक दक्ष, वरीय संवाददाता, हिन्दुस्तान (हिन्दी दैनिक) पटना
सन् 2021 : श्री दीपक प्रियदर्शी, रेजिडेंट एडिटर, R9Tv, बिहार
सन् 2022 : श्री प्रभात रंजन, दैनिक जागरण, पटना

राष्ट्रीय सहारा, 11/2/12

'कसम' की शानदार प्रस्तुति

पटना (एसएनबी)। अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव के तीसरे दिन मणिपुर के राजा गैरीबानीवाज से जुड़ी वास्तविक घटना पर आधारित कहानी 'कसम' की भावपूर्ण प्रस्तुति की। यह प्रस्तुति मणिपुर की प्रसिद्ध नाट्य संस्था इंस्टीच्युट फॉर ट्रेडिशनल आर्ट्स एंड कल्चर के कलाकारों द्वारा की गयी।

नाटक की कहानी एक बहादुर औरत थांवल की है, जो राजा गैरीबानीवाज से बदला लेती है। थांवल अपने दो बेटों की सहायतासे राजा को निष्कासित कर अपने पति की मौत का बदला लेती है और कसम पूरी होती है। नाटक में राजा की भूमिका एस. बीरेन्द्र सिंह ने की। अन्य भूमिकाओं में सनाजाओबा सिंह, देबलान सिंह, प्रेमलता देवी, सरदानंद सिंह, नैन्सी का प्रदर्शन सराहनीय रहा। नरेन्द्र सिंह का संगीत निर्देशन व सोमरिज सिंह का संगीत संयोजन ने भी दर्शकों को प्रभावित किया। आयोजकों ने बताया कि शनिवार को अरुण सिन्हा लिखित एवं सुमन कुमार निर्देशित नृत्य नाटिका गोपा (यशोधरा) की प्रस्तुति की जाएगी।

रंगकर्म : नाट्योत्सव में नाटक का मंचन करते मणिपुर के कलाकार।

हिन्दुस्तान 11/2/12

खबर-दर-खबर

मणिपुरी कलाकारों ने दिखाया जलवा

पटना। कला जागरण और मगध कलाकार की ओर से आयोजित भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव के तीसरे दिन शुक्रवार को कहानी कसम की प्रस्तुति मणिपुर की नाट्य संस्था इंस्टीच्यूट फॉर ट्रेडिशनल आर्टस एण्ड कल्चर के कलाकारों ने की। कहानी मणिपुर के राजा गैरीबानीवाज से जुड़ी वास्तविक घटना पर आधारित है। इसमें दिखाया गया है कि थांवल नामक की औरत ने अपने पति के मौत का बदना राजा से लेने का कसम खाती है। नाटक का निर्देशन एस बिरेन्द्र सिंह ने किया। इसमें प्रेमलता देवी, देबलान सिंह, सनाजा ओबा सिंह ने प्रस्तुति दी। (सं.सू.)

प्रभात खबर

मंच पर दिखा गोपा का दर्द

पटना : गौतम बुद्ध एक रात चुपके से अपने बेटे राहुल और पत्नी गोपा को छोड़ कर घर से निकल जाते हैं. तपस्या करते हैं. ज्ञान की प्राप्ति होती है. एक वर्ष बाद वे कपिलवस्तु आते हैं. उनके पिता शुद्धोपन की जगह पर उनका भाई राजकुमार सौंदर्यनंद राजकाज चला रहे हैं. द्विज गौतम बुद्ध को पाखंडी घोषित कर देते हैं. राज्य में यह स्थिति देख कर उनकी पत्नी के धैर्य का बांध टूट जाता है. अपने पुत्र राहुल को बुद्ध के शरण में समर्पित कर देती है व स्वयं भिक्षुणी बन जाती है. गोपा की यही व्यथा, अंतर्वेदना और त्याग उसे यथार्थ रूप में यशोधरा कहलाने की अधिकारिणी बनाती है. इस कथा को बेहद खूबसूरती के साथ कालिदास रंगालय में पेश किया गया.

12/2/12

राष्ट्रीय सहारा 12/2/12 पटना

नृत्य नाटिका 'गोपा' ने मोहा मन

उठे हाथों की भाषा : नृत्य नाटिका गोपा प्रस्तुत करतीं कलाकार।

पटन (एसएनबी)। कला जागरण द्वारा आयोजित नाट्ययोत्सव के चौथे दिन कालिदास रंगालय में नृत्य नाटिका 'गोपा' के मंचन ने दर्शकों का मन मोह लिया। नृत्य नाटिका के कलाकारों ने भगवान बुद्ध के गृह त्याग, कठोर तप और उनकी पत्नी गोपा की व्यथा, अंतर्वेदना और त्याग को बड़े ही सहज भाव से दर्शकों के बीच प्रस्तुत किया।

इस प्रस्तुति से कलाकारों ने यह बताने का प्रयास किया कि किन परिस्थितियों में राजकुमार सिद्धार्थ यानी गौतम बुद्ध अपना गृह त्याग करते हैं और वापस एक साल बाद उनका आगमन होता है तथा उन्हें किस तरह से कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। नृत्य नाटिका में निलेश्वर मिश्रा ने गौतम बुद्ध, यामिनी ने गोपा, छन्दक का शैलेश जमैयार और बौद्ध भिक्षु का किरदार अभिषेक व कुणाल सिकन्द ने निभाया। अरुण सिन्हा द्वारा लिखित इस नृत्य नाटिका का निर्देशन सुमन कुमार ने किया।

IFFCO
इफको नैनो यूरिया
(तरल)
विश्व का पहला नैनो उर्वरक
फसल उपज बढ़ाए
किसान की लागत करे कम
पर्यावरण प्रदूषण रोकने में सहायक
मृदा की पोषण गुणवत्ता बढ़ाए
500 मिली बोतल मात्र ₹ 240/- में
IFFCO
NANO UREA
Liquid
IFFCO
INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones : 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website : www.iffco.coop

THE TAPINDU URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.

Arunachal Bhawan, New Dakbunglow Road, Patna-800001
Phone No. 0612-2234203, 2201481

Chairman

SRI VISHAL SINGH

FACILITY AVAILABLE

- Monthly Income Scheme (MIS)
- Locker Facility
- Higher Rate of Interest on Deposit
- Instant Demand Draft & Bankers Cheque Issuance Facility
- Convenient & Flexible Loan Facility
- ATM (RUPAY CARDS)
- RTGS & NEFT Facility
- Govt. Tax Paid, (Income Tax, Services Tax, Etc.)

Printd by: Aditya Publication #9576099416